RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 14, Issue: 2, July-December, 2022

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

www.jvbi.ac.in

13 वाँ दीक्षान्त समारोह आयोजित
06-07

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग का उद्घाटन
08-09

विश्व शांति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन
16

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित
17

10 दिवसीय एनसीसी के एटीएस शिविर में छात्राओं ने जीतें पुरस्कार
44

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से प्रो. बी.एल. जैन (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय – मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक – प्रो. दामोदर शास्त्री

Grade 'A' by NAAC & Category 'A' by Ministry of Education

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

Acharya Mahaprajna Medical College & Hospital of Naturopathy and Yoga

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit.
Ph.D.
M.A. / M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Political Science
Yoga and Science of Living

- English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

Regular and Distance Education

Upcoming Programme : Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- Grade 'A' by NAAC, Bangalore
- Category 'A' by Ministry of Education, GoI, New Delhi
- 12B Status by UGC, New Delhi
- India's 10 Best Universities to Watch in 2021 by Education Stalwarts magazine
- "Dr Shri Prakash Dubey Smriti National Philosophy Award" by All India National Philosophy Council.
- 'Best in Class University award' in 2018 at World HRD Congress
- "Best Deemed University in Rajasthan" by Asia Education Summit & Awards, 2018
- Ranked 10th in Top-25 Private/ Deemed Universities in India-2017 by Higher Education Review Magzine
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association of North America
- Presidential award conferred to four faculty members
- 7 World records by the students of Dept. of Yoga and Science of Living
- Smart Classrooms
- Wi-Fi Equipped Safe and Secure Campus
- Rich Placements
- Hostel and Canteen Facility
- Air Conditioned Auditorium
- More than 15 highly Equipped Labs

For more details please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

सेवाभाव और ज्ञान से बनाएँ धरती को स्वर्ग

जैन विश्वभारती संस्थान के प्रथम अनुशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी एवं द्वितीय अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ थे, जिनका आशीर्वचन और संरक्षण सदैव जैन विश्वभारती संस्थान को प्राप्त हुआ। यह संस्थान केवल ज्ञान ही नहीं, वरन् संस्कारों के विकास हेतु सदैव सलक्ष्य प्रयास करता रहे। साथ ही यह भी काम्य है कि इस संस्थान के विद्यार्थियों में सेवा एवं परोपकार की भावना का विकास हो और सेवा भी ऐसी सेवा कि जिसमें राष्ट्र एवं सम्पूर्ण सृष्टि की समृद्धि सन्निहित हो। हम अपने ज्ञान के माध्यम से इस धरती को स्वर्ग बनाने का प्रयास करें; अगर ऐसा मनोभाव कुछ विद्यार्थियों में भी पुष्ट होता है और वे ऐसा कर पाते हैं, तो यह एक बहुत अच्छा कार्य हो सकता है।

13वां दीक्षांत समारोह,
लाडनूँ।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

01. शिक्षा के साथ चिकित्सा क्षेत्र में जैविभा संस्था का अहम कदम 05

13वाँ दीक्षांत समारोह

01. शिक्षा का उपयोग जीवन, समाज और राष्ट्र में ज्ञान का आलोक फिलाने में करें - राज्यपाल 06

उद्घाटन

01. आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग का उद्घाटन 08

विविध

01. अमेरिका से आये दल ने किया विश्वविद्यालय का अवलोकन 10
02. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में संस्थान के 3 विद्वानों के पत्रवाचन 10
03. आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति की नहीं बल्कि जीवन शैली भी है- डॉ मनीषा चौधरी 11
04. कार्मिकों व विद्यार्थियों ने किये चातुमार्स प्रवास स्थल पर अनुशास्ता के दर्शन 12
05. एनसीसी छात्रा का दिल्ली की गणतंत्र दिवस परेड के लिए चयन 12
06. क्षमापना दिवस समारोह का आयोजन 13
07. छात्रा ने संसद में किया राजस्थान का प्रतिनिधित्व 13
08. पांच दिवसीय शिक्षक पर्व पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित 14

अहिंसा एवं शांति विभाग

01. शांति स्थापना के लिए नकारात्मक वातावरण दूर करें- एसडीएम गढ़वाल 16
02. निर्भय और निडर होकर हमें अहिंसक नीति पर चलना चाहिए- थानाधिकारी राजेन्द्र कमाण्डो 17
03. युवा शिविर में अहिंसा व शांति का परीक्षण 17

योग एवं जीवन विज्ञान विभाग

01. उड़ीसा के भुवनेश्वर में अंर्तविश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता में दो टीमें शामिल 18
02. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग के प्रयोग सहायक 18

आईक्यूऐसी

01. नई शिक्षा नीति में समाहित रहेंगे रोजगार बढ़ाने के अवसर- प्रो. यादव 18

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

01. राष्ट्रीय व्याख्यान माला में जैन आगम में ज्योतिष पर व्याख्यान प्रस्तुत 19
02. 'प्राकृत का विकास : समस्यायें और समाधान' पर व्याख्यान आयोजित 19
03. हजारों साल पूर्व जन भाषा रही प्राकृत का आधुनिक पद्धति से अध्ययन जरूरी- डॉ प्रियदर्शना जैन 20
04. भारतीय संस्कृति के रक्षण के लिए आगम - संपादन आवश्यक - प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा 20
05. गाथासप्तशती में है प्राकृत साहित्य का सार-डॉ राजश्री मोहाडीकर 20
06. प्राकृत पाण्डुलिपियों की सम्पादन-कला में व्याकरण और विषय का पूरा ध्यान आवश्यक 21
07. अध्यात्मिक विकास संबंधी विश्व सम्मेलन में समणियों की सहभागिता 21

शिक्षा विभाग

01. जीवन कौशल पर तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन 22
02. 'मेला विश्वविद्यालय - स्वच्छ विश्वविद्यालय' कार्यक्रम 22
03. गांधीजी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता पर दो दिवसीय सेमिनार आयोजित 23
04. संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में त्रिगुण प्रकृति पर व्याख्यान आयोजित 24
05. छात्राध्यापिकाओं के दल ने जाना आचार्य महाप्रज्ञ का संपूर्ण जीवनवृत्त 24
06. जीवन में नकारात्मकता नहीं आने दे एवं शालीन बने रहें - कुलपति प्रो. दूगड़ 25
07. शिक्षण की प्रोजेक्ट मैथड ह्यूरिस्टिक विधि पर सात दिवसीय एक्सचेंज कार्यक्रम 26
08. वनस्पति विज्ञान से संबंधित विभिन्न मॉडल बनाकर किया प्रदर्शन 27
09. आचार्यश्री महाश्रमण रचित 'रस्मियां अर्हत भगवान की' कृति की समीक्षा 28
10. यम्मी मिलेट्स कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन 28
11. छात्राओं ने किया कलात्मक जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण 29
12. देशी मोटे अनाज से स्वास्थ्य व शुद्ध जीवन शैली का विकास संभव 30
13. भारतीय भाषा दिवस मनाया 30
14. पोस्टर, मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन 31

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

01. व्यक्तित्व विकास पर 7 दिवसीय वेबिनार का आयोजन 32
02. 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ चिंतन' अवधारणा पर प्रेक्षा शिविर आयोजित 33
03. मासिक व्याख्यान माला का आयोजन 34
04. गुगल डॉक्यूमेंट पर मासिक व्याख्यान का आयोजन 35
05. राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में कांता सोनी रही अव्वल 35

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम

01. वैश्विक नेतृत्व की दशा में मौजूद है भारत के समक्ष अनेक चुनौतिया - प्रो. यादव 36
02. 'स्वास्थ्य व रोग' संबंधित सेमिनार का आयोजन 37
03. राष्ट्रीय एकता व एकजुटता के लिये गायन कार्यक्रम का आयोजन 37
04. 'हर घर तिरंगा' अभियान का आयोजन 37
05. निबंध व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन 37
06. रैली निकालकर लगाये तिरंगे झंडे 38
07. राष्ट्रीय भक्ति गायन/देश भक्ति गीत/ पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित 38
08. 'मेरी भाषा मेरा हस्ताक्षर' पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित 39

सतर्कता जागरूक सप्ताह

01. 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत' थीम पर सतर्कता जागरूक सप्ताह आयोजित 40

साईबर सुरक्षा

01. साईबर सुरक्षा जागरूकता पर कार्यक्रम का आयोजन 41
02. साईबर सुक्योरिटी संबंधी वीडियो मेकिंग कॉन्टेक्ट आयोजित 41

फिट इण्डिया कार्यक्रम

01. फिट इण्डिया कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन 42
02. खो-खेल प्रतियोगिता 42
03. योग एवं प्रेक्षा ध्यान कार्यक्रम आयोजित 43
04. फि इण्डिया रंग प्रतियोगिता/कबड्डी खेल प्रतियोगिता 43

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

01. 10 दिवसीय एटीएस शिविर में छात्राओं ने जीते पुरस्कार 44
02. दो दिवसीय सेमिनार में दिये विभिन्न प्रशिक्षण 44
03. राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस समारोह से लोटी छात्रा का सम्मान 45
04. ईमानदारी व नैतिकता के टास्क पर मिला स्वर्ण पदक 45

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

01. जंक फूड के विरोध में छात्राओं ने निकाली रैली 46
02. राष्ट्रीय एकता सप्ताह में प्रश्नोत्तरी व एकता रैली आयोजित 47

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-14, अंक- 2

जुलाई - दिसम्बर, 2022

संरक्षक

प्रो. बच्छराज दूगड़

कुलपति

सम्पादक

प्रो. दामोदर शास्त्री

अच्युतकान्त जैन

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन

पवन सैन

प्रकाशक

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ - 341306

नागौर, राजस्थान

दूरभाष : (01581) 226110, 226230

E-mail : jvbiladnun@gmail.com

Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

शिक्षा के साथ चिकित्सा क्षेत्र में जैविभा संस्थान का अहम कदम

मरूभूमि के इस सुदर आंचल में महिला शिक्षा, प्राच्यविद्याओं की शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए पूर्ण समर्पित होकर निरन्तर प्रगति के सोपान छूता हुआ विश्वविद्यालय जैन विश्वभारती संस्थान ने अब प्राकृतिक व योग चिकित्सा के क्षेत्र में कदम बढाए हैं। आचार्यश्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक अनुशासन में संस्थान में आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग का उद्घाटन इस समूचे अंचल के लोगों के लिए एक सौगात साबित होगा। आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में हुए इस कार्यक्रम में कुलाधिपति केन्द्रीय संस्कृति मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को योग की तरह ही विश्व नेतृत्व करने वाली विधा बताया और जी-20 देशों के नेतृत्व के दौरान उन सभी देशों के प्रतिनिधियों को लाडनूं लाकर संस्थान के इस मेडिकल कॉलेज का अवलोकन करवाने का विश्वास भी दिलाया। आचार्यश्री ने इस अवसर पर स्प्रिच्युअलपैथी की चर्चा की और आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति को गहराई वाली पद्धति बताया।

अध्यात्म विज्ञान इस संस्थान के लिए प्राणभूत है। संस्थान का योग व प्रेक्षाध्यान विभाग, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग, प्राकृत व संस्कृत विभाग आदि के द्वारा अध्यात्म की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ ने नेचुरोपैथी के बाद आयुर्वेद और होम्योपैथी पर भी आधुनिक स्वरूप में काम करने और भारतीय विद्याओं का केन्द्र बनाने के साथ जैन विश्व भारती परिसर को 'विज्डम सिटी' के रूप में विकसित करने के आचार्यश्री महाप्रज्ञ के स्वप्न को पूर्ण करने की तरफ बढने का संकल्प व्यक्त किया।

संस्थान का 13वां दीक्षांत समारोह यहां सुधर्मा सभा में राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र के मुख्य आतिथ्य में हुआ, जिसमें कुल 4543 विद्यार्थियों व शोधार्थियों को उपाधियां वितरित की गई। यह अत्यंत सुखद है कि जैन विश्वभारती संस्थान से जैन व जैनेत्तर साधु-साध्वियां व समण-समणियां तक उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। साधुवर्ग के लिए पी.एच.डी. प्राप्त करना इस देश के लिए गौरव की बात है। सुशिक्षित संत वर्ग इस देश को नई दिशा देने में सक्षम सिद्ध हो पाएंगे। युवा शिक्षित व प्रोफेशनल पीढी उनकी बात को पूर्ण रूप से महत्व दे पाएंगे और स्वीकार भी कर पाएंगे। इससे मूल्यों की स्थापना में सफलता मिल पाएगी।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने जर्मनी के विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों को लगाई गई आग से लेकर भारत में नालंदा विश्वविद्यालय की आगजनी का विवरण देते हुए पुस्तकों का महत्व बताया। यहां उल्लेखनीय रहे कि जैन विश्वभारती संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय 'वर्द्धमान ग्रंथागार' में प्रत्येक विषय की पुस्तक उपलब्ध है और इन पुस्तकों की संख्या 75,000 से अधिक है। ई-जर्नल, रिसर्च जर्नल आदि इस संख्या से अलग है। यहां पांडुलिपि संरक्षण के लिए केन्द्र बनाया जाकर निरन्तर पांडुलिपियों को संग्रहित, सुरक्षित, संरक्षित करने की प्रक्रिया वैज्ञानिक ढंग से की जा रही है। केन्द्र पर 6,655 पांडलिपियां संग्रहित हैं।

यहां अमेरिका से आए एक दल ने विश्वविद्यालय का अवलोकन करके इसकी सराहना मुक्तकंठ से की। यहां केवल संसाधन ही उच्च स्तर के नहीं हैं, बल्कि गतिविधियों में भी उच्च सोच का दर्शन होता है। 'हर दिन आयुर्वेदः हर घर आयुर्वेद' थीम पर आयुर्वेद जागरूकता कार्यक्रम, मिल्लेट्स पर विविध कार्यक्रमों द्वारा जनजागृति, बढ़ते साईबर अपराधों की रोकथाम के लिए निरन्तर साईबर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष में निरन्तर विविध प्रकार के आयोजनों से राष्ट्रभक्ति का जागरण आदि संस्थान के प्रत्येक विभा द्वारा अनवरत संचालित किए जाते रहते हैं।

- प्रो. दामोदर शास्त्री

शिक्षा का उपयोग जीवन, समाज और राष्ट्र में ज्ञान का आलोक फैलाने में करें- राज्यपाल

13वां दीक्षांत समारोह, 4543 विद्यार्थियों को दी गई डिग्रियां, 17 साधु-साध्वियों ने भी ली पी.एच.डी. की डिग्रियां

राज्यपाल कलराज मिश्र ने शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि देश के संसाधनों का बेहतर उपयोग शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा का उपयोग सम्पूर्ण मानवता के लिए होना चाहिए। ज्ञान का उपयोग अपने जीवन को रोशन करने के साथ ही समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए भी होना चाहिए। वे यहां सुधर्मा सभा में 12 नवम्बर को संस्थान के 13वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि दीक्षांत से शिक्षा का अंत नहीं हो जाता, बल्कि यह शुरूआत है, जिसमें प्राप्त शिक्षा का उपयोग भावी जीवन, समाज और राष्ट्र के लिए ज्ञान का आलोक फैलाने के लिए कर सकते हैं। स्वस्थ लोकतंत्र का आधार शिक्षा ही होता है। शिक्षा पूर्ण होने के बावजूद भी सीखने की कोई सीमा नहीं होती। उन्होंने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के ध्येय वाक्य 'णाणं सारमायारो' यानि ज्ञान का सार आचार है, को उद्धृत करते हुए कहा कि यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। विश्वविद्यालयी शिक्षा के साथ उसे अधुनातन ज्ञान के साथ अपडेट भी किया जाना जरूरी होता है। उन्होंने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय महान केन्द्र बनने की ओर अग्रसर है। आचार्य तुलसी की महान सोच की प्रशंसा करते हुए उन्होंने बताया कि उनमें आगे की दृष्टि और भविष्य की सोच थी।

पुस्तकें जीवन की दिशा बदल सकती हैं

राज्यपाल ने कहा कि पुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। पुस्तकें जीवन को दिशा प्रदान कर सकती हैं। ज्ञान और विवेक छिपे हुए होते हैं, लेकिन पुस्तके पढने पर उनके बीज उगने लगते हैं। ज्ञान और विवेक को नष्ट करने के लिए उनके माध्यमों पर हमला किया जाता है। जर्मनी में हिटलर ने विश्वविद्यालयों के विशाल पुस्तकालयों की पुस्तकों को जलवा दिया था। लेकिन, लोगों में जागृति के कारण वहां उस दिन को आज पुस्तकें पढने के दिन के रूप में मनाते हैं और उस दिन सभी लोग सभी जगह पुस्तकें पढते हैं। भारत में भी हमलावर बख्तियार खिलजी ने अपनी कुंठाओं के चलते नालंदा विश्वविद्यालय में आग लगा दी। पूरे तीन महिनों तक पुस्तकें जलती रही थी। किताबों का पढना सदैव व्यक्ति को उर्वर बनाता है और किताबें कल्पनाशीलता व तर्कशीलता को बढाती है। उन्होंने कहा कि सृजनात्मक शिक्षा के लिए जरूरी है कि पाठ्यपुस्तकों के साथ व्यक्तित्व

विकास व निखार के लिए उपयोगी पुस्तकों को भी पढा जाए। उन्होंने बताया कि नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि इस देश में उच्च शिक्षा का प्रतिनिधित्व करते थे।

ज्ञान के साथ संस्कारों का भी विकास आवश्यक

विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने इस अवसर पर सभी दीक्षार्थियों को 'शिखा पदं' का उच्चारण करवाया और कहा कि ज्ञान के साथ संस्कार बहुत जरूरी होते हैं, इसी से जीवन उपयोगी बनता है। विद्या का आभूषण विनय को बताया गया है। मनुष्य जैसे अपने शरीर को आभूषणों से सजाता है, वैसे ही विद्या विनय के साथ होने पर वह शोभा पाती है। ज्ञान के साथ संस्कारों का विकास भी होना चाहिए। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके सेवा करे और धरती को स्वर्ग बनाने का प्रयास करें। हमेशा जीवन में अपने ज्ञान को और आगे बढाने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। आचार-विचार पुष्ट होने से ही आध्यात्मिक विकास होता है।

कुलाधिपति केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने संविधान की प्रस्तावना का उल्लेख करते हुए कहा कि अधिकार जानते हो तो कर्तव्य भी जानने जरूरी हैं। शिक्षा इसी पर आधारित होनी चाहिए, जिसमें कर्तव्यों का भी भान हो। उन्होंने आचार्य तुलसी के अणुव्रतों को महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि अणुबम की तुलना में वे अधिक प्रभावी काम करते हैं। अणुबम विश्व का विनाश कर सकते हैं और अणुव्रत विश्व को नवीन स्वरूप दे सकते हैं। इस अवसर पर उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा लिखित अणुव्रत गीत 'संयममय जीवन हो' का गान भी किया।

कुल 4543 विद्यार्थियों को दी गई डिग्रियां

समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने संस्थान का परिचय प्रस्तुत किया और 20 मार्च 1991 में स्थापना से लेकर आज तक की प्रगति का विवरण भी संक्षेप में प्रस्तुत किया। उन्होंने यूजीसी से 12-बी मिलने, नैक से ए-ग्रेड मान्यता मिलने, तीन क्षेत्रों में आईएसओ सर्टिफिकेट मिलने, डीआरडीओ द्वारा कोविड महामारी से बचने के लिए तैयार दवा के निर्माण में इस संस्थान के एमिरेटस प्रोफेसर विनय जैन की भूमिका, पूर्व कुलपति प्रो. रामजी सिंह को राष्ट्रपति पुरस्कार मिलने और अन्य कई शिक्षकों को राष्ट्रपति सम्मान, योग के छात्रों द्वारा 7 विश्व रिकॉर्ड कायम किए जाने, यूजीसी द्वारा डुआल मोड में परीक्षण करवाने वाला देश का पहला ए-ग्रेड विश्वविद्यालय होने आदि उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी।

समारोह में कुल 4543 विद्यार्थियों को डिग्रियां वितरित की गई। इनमें से 69 शोधार्थियों को पीएचडी प्रदान की गई, जिनमें मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार, मुनिश्री विश्रुत कुमार सहित कुल 17 साधु-साध्वियां व समणियां सम्मिलित हैं। अन्य उपाधियां पाने वालों में विभिन्न विभागों के स्नातकोत्तर, स्नातक, एमएड, बीएड, बीए-बीएड, बीएससी-बीएड के विद्यार्थी शामिल हैं। गोल्ड मैडल और विशेष योग्यता प्रमाण पत्र कुल 34 विद्यार्थियों को प्रदान किए गए। दीक्षांत समारोह के प्रारम्भ में मुमुक्षु बहिनों ने कुलगीत के रूप में मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने किया।

श्री विमल कुमार नाहटा द्वारा गोल्ड-मेडल हेतु अनुदान

बी.एन. ग्रुप ऑफ कम्पनीज के निदेशक श्री विमल कुमार नाहटा, गुवाहाटी, आसाम द्वारा संस्थान के 13वें दीक्षान्त-समारोह के अवसर पर संस्थान के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के नियमित पाठ्यक्रमों में प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को प्रदत्त पदकों हेतु पूर्ण अनुदान प्रदान किया गया। ज्ञातव्य हो कि श्री विमल कुमार नाहटा द्वारा विगत 7 वर्षों में आयोजित प्रत्येक दीक्षान्त-समारोह में विद्यार्थियों को प्रदत्त पदकों हेतु नियमित रूप से पूर्ण अनुदान प्रदान दिया जा रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग का उद्घाटन

भारत योग में ग्लोबल लीडर, अब नेचुरोपैथी में भी बनना है- अर्जुनराम मेघवाल

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा है कि सारे संसार में 'लिव विद नेचर' पर जोर दिया जाने लगा है, जो कि भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। यूरोप व पश्चिमी देशों में लिव विद नेचर की बात की जा रही हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि हम ''जिओ और जीने दो'' के सिद्धांत को मानते आए हैं। भारत की संस्कृति और जैन दर्शन में इसे परम्परा बनाया गया है। वे यहां आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 12 नवम्बर को आयोजित जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एंड योग के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। वे इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। उन्होंने कहा कि इंडोनेशिया के बाली जाने के दौरान उन्हें वहां कहा गया कि यहां से सूरज उगेगा, आप उसे देखो और मेडिटेशन करो। मैंने कहा कि अरे यह तो हमारे भारत का काम है। उन्होंने आह्वान किया कि योग में हम ग्लोबल लीडर बन गए हैं, उसी प्रकार हमें नेचुरोपैथी में भी विश्व का नेतृत्व करना है। केन्द्रीय मंत्री ने इस अवसर पर बताया कि जी-20 ऐसा प्लेटफार्म है जो संसार की 85 प्रतिशत इकोनोमी को प्रभावित करता है। इन जी-20 के 43 देशों में दुनिया की आबादी का दो तिहाई हिस्सा है। इसकी अध्यक्षता अब भारत को मिल रही है। इन सभी देशों को हम यहां लाडनूं के इस प्रोजेक्ट को दिखाएंगे। इस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उन्होंने बताया कि इन देशों के नेचुरोपैथी से जुड़े लोगों को यहां प्राकृतिक चिकित्सा के विविध आयामों के साथ अध्यात्म विज्ञान से भी परीचित करवाएंगे। उन्होंने कहा कि उनका पूरा प्रयास रहेगा कि लाडनूं में उन सभी देशों के प्रतिनिधियों की एक कांफ्रेंस रखवाएं।

प्राणभूत सबके प्रति अनुकम्पा रखना आध्यात्मिक चिकित्सा

समारोह में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पावन पाथेय देते हुए नेचर या प्रकृति शब्द सूर्य की धूप, चन्द्रमा की चांदनी, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि से मिलने वाला है। व्यक्ति प्रकृति के समीप रह सकता है। पर नेचुरोपैथी से भी गहराई की चिकित्सा पद्धति है- 'स्प्रिचुअलपैथी।' यह आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति है। इसमें व्यक्ति को अपने भीतर रहना होता है। प्राकृतिक चिकित्सा में भौतिक तत्वों पर आधारित है और आध्यात्मिक चिकित्सा सूक्ष्म तत्व पर आधारित है। भीतर रहना और राग-द्वेष आदि से मुक्त रहना अध्यात्म चिकित्सा में आता है। विजातीय तत्त्व शरीर में प्रवेश करने पर बीमारी आती है, उसे प्राकृतिक चिकित्सा दूर कर देती है, लेकिन इससे भी गहरी बात है कि हमारे कर्मों का प्रभाव। स्प्रिचुअल पैथी में बीमारी को आने ही नहीं दिया जाता है। प्राणभूत सबके प्रति अनुकम्पा रखना आध्यात्मिक चिकित्सा ही है। प्रसन्न आत्मा और मन प्रसन्न रहे तो सब धातु आदि स्वस्थ रहते हैं। शारीरिक अनुकूलता के साथ मानसिक व भावात्मक अनुकूलता भी जरूरी है। लिव विथ नेचर अपने स्वभाव में रहने पर ही संभव है। उन्होंने योग को मोक्ष मुक्ति का मार्ग बताया और कहा कि योग का आधार केवल आसन, प्राणायाम आदि ही नहीं, बल्कि प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा आदि भी योग के अभिन्न अंग हैं। आचार्यश्री ने

शिक्षा के साथ चिकित्सा, स्वास्थ्य व साधना को भी प्रमुख बताया और कहा कि आचार्य तुलसी की जन्मभूमि पर यह नेचुरोपैथी का बहुत बड़ा व महत्त्वपूर्ण प्रकल्प है। यहां जैन विश्व भारती संस्थान में आध्यात्मिकता, धार्मिकता, मूल्यवता, शारीरिक चिकित्सा व आध्यामिक चिकित्सा का केन्द्र हो यही भावना है।

आयुर्वेद और होमियापैथी को भी करेंगे अधुनातन स्वरूप में प्रस्तुत

समारोह में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ का स्वप्न था कि यह परिसर विज्डम सिटी के रूप में विकसित हो और भारतीय विद्याओं का केन्द्र बने। इसी के आधार पर आज यह प्राकृतिक चिकित्सा प्रकल्प के रूप में उनका स्वप्न साकार हुआ है। आयुर्वेदिक चिकित्सा को भी अधुनातन रूप में प्रस्तुत करने के प्रकल्प और

होमियोपैथी प्रकल्प पर भी हमारा विचार है, जो आचार्यश्री के आशीर्वाद से सफल हो पाएगा। उन्होंने इस अवसर पर मुनिश्री विश्रुत कुमार, मुनिश्री कुमार श्रमण, मुख्य मुनि महावीर कुमार, डॉ. रहमान, डॉ. चिराग आदि तथा सहयोगी धर्मचंद लूंकड़, बाबूलाल शेखानी, जयंती लाल सुराना, राकेश कठोतिया आदि का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका पूरा सहयोग रहा। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, भवन निर्माण में सहयोगी कमल किशोर ललवाणी, सहयोगी जयंतीलाल सुराणा व इन्द्राजमल भूतोड़िया ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर उपकरण सहयोगी राकेश कठोतिया व आरती कठोतिया, डॉ. अल्ताफुर्रहमान, भवन निर्माण के ठेकेदार बीएल लोढा का सम्मान भी किया गया। समारोह का प्रारम्भ समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगल संगान से किया गया और आचार्यश्री महाश्रमण के मंगलपाठ के बाद समारोह सम्पन्न हुआ।

अमेरिका से आए दल ने किया विश्वविद्यालय का अवलोकन

योग के विद्यार्थियों की प्रस्तुति ने किया उन्हें अभिभूत

जैन विश्व भारती परिसर में निर्मित 'साहित्य सदन' के अनुदानकर्ता अमेरिका प्रवासी स्वतंत्र जैन और विमला जैन यहां अपने दल के दो दर्जन साथियों के साथ जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय में आए और विश्वविद्यालय का अवलोकन करने के बाद उन्होंने मुक्तकंठ से सराहना की। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस क्षेत्र में इतना अच्छा संस्थान संचालित किया जा रहा है। उनके विश्वविद्यालय आगमन पर यहां उनका स्वागत-सम्मान किया गया। बाद में आयोजित एक बैठक में समणी अमलप्रज्ञा ने उन्हें विश्वविद्यालय में संचालित विविध पाठ्यक्रमों, सुविधाओं एवं अन्य व्यवस्थाओं सहित अन्य प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर आगन्तुकों की टीम ने संस्थान के डिजीटल स्टुडियो, ऑडिटोरियम, जिम, प्रशासनिक व शैक्षणिक भवनों एवं सुविधाओं का अवलोकन किया। सेमिनार हॉल में उनके समक्ष योग एवं जीवन विज्ञान के विद्यार्थियों ने योगासनों, सूर्यनमस्कार, विभिन्न यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया, जिसे देखकर सभी अभिभूत हो गए। उनके साथ जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, पूर्व अध्यक्ष

धर्मचंद लूंकड, महाश्रमण विहार के अनुदानकर्ता उम्मेद बोकड़िया भी थे। उन्हें अवलोकन करवाने के दौरान रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, डिप्टी रजिस्ट्रार विनीत सुराणा, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. अशोक भास्कर आदि भी साथ रहे।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में संस्थान के तीन विद्वानों के पत्रवाचन

तमिलनाडू श्रीपेरूम्बदुर स्थित राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान तथा भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद् दिल्ली के सौजन्य से 23 दिसम्बर को नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के आदिवासी शिक्षा केंद्र में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने सहभागिता की। इन तीनों व्याख्याताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने पत्रवाचन इस अन्तरराष्ट्रीय सेमिनार में किए।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने 'लोक प्रशासन में स्थानीय निकायों की भूमिका-एक अवलोकन' पर, डॉ. लिपि जैन ने 'पारदर्शी समाज में मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने में एनईपी 2020 का महत्त्व' विषय पर तथा डॉ. बलबीर सिंह द्वारा 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण तथा सुशासन' विषय पर पत्र वाचन किया।

सीमा पर तैनात सैनिकों को छात्राओं ने भेजी राखियां

संस्थान की छात्राओं ने राखियां तैयार करके देश की सीमाओं पर तैनात सैनिकों को भिजवाई है, ताकि वे वहां अपनी बहिन के एहसास को अनुभव कर सकें और रक्षा के पर्व को मना पाएं। राखी के साथ उन्होंने देश की सीमाओं की रक्षा को ही इस रक्षासूत्र का मुख्य उद्देश्य बताते हुए कलाई में उनका रक्षा-सूत्र धारण करके राष्ट्ररक्षा के अपने प्रण को और दृढ बनाने की अपील की है। सैनिकों को रक्षा सूत्र भेजने के कार्य में विश्वविद्यालय की बीएड छात्राओं एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया।

छात्रा ऐश्वर्या सोनी, दीक्षा स्वामी, पूजा स्वामी, मोनिका भाकर, ज्योति फुलवारिया, ममता नाथ, सोनू, सूर्यांशा चौधरी, प्रियंका चौधरी, सुनिमा, कंचन, सुरमा चौधरी, उर्मिला जांदू, उर्मिला जाजूंदा, बिन्दु, प्रियंका मेघवाल आदि ने ये राखियां सैनिकों के लिए भिजवाई।

आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति ही नहीं, बल्कि जीवन-शैली भी है- डॉ. मनीषा चौधरी

'हर दिन आयुर्वेद-हर जगह आयुर्वेद' थीम पर आयुर्वेद जागरूकता पर व्याख्यान

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संस्थान द्वारा 'हर दिन आयुर्वेद – हर जगह आयुर्वेद' थीम पर 14 अक्टूबर को आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में लाडनूं की आयुष चिकित्सा अधिकारी डॉ. मनीषा चौधरी ने इस आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को भारत की ओर से विश्व को महान देन बताई और उन्होंने ऐलोपैथिक तथा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए आयुर्वेद पद्धति की अच्छाइयों को इंगित किया। उन्होंने रोगमुक्ति और स्वास्थ्यलाभ के लिए आयुर्वेद को सबसे श्रेष्ठ बताते हुए जन-जन के लिए आयुर्वेद अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. मनीषा ने आयुर्वेद के तीन तत्त्वों वात, पित्त और कफ पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि इनसे मानव स्वभाव एवं प्रकृति का निर्धारण होता है। हमें निरोग रहने के लिए इन तीनों के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी होता है, इसलिए आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति ही नहीं, बल्कि आयुर्वेद जीवन पद्धति को अपनाया जाना जरूरी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि भारत सरकार द्वारा आयुष पद्धति को जन-जन की पद्धति बनाने के जो अभियानों संचालित किए जा रहे हैं, उनकी सफलता के लिए हम सबको सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। इसके लिए समाज तक इसका संदेश पहुंचाना सबका दायित्व बनता है।

छात्राओं ने कहा कि जीवन में अपनाएंगी आयुर्वेद

'हर दिन आयुर्वेद हर जगह आयुर्वेद' थीम को आधार मानकर जागरूकता बढ़ाने के लिए संचालित कार्यक्रमों को लेकर छात्राओं ने भी अपने अनुभव शेयर किए। छात्रा तनिष्का शर्मा ने बताया कि कार्यक्रमों के माध्यम से आयुर्वेद के महत्त्व के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। प्रियंका सोनी ने प्रभावित होकर आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को अपने जीवन में अंगीकार करने की बात कही। छात्रा खुशी जोधा ने कहा कि इस कार्यक्रम से आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ आयुर्वेद को जीवन में अपनाए जाने की प्रेरणा मिली है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और कहा कि आयुर्वेद जीवन का आधार है और बदलती हुई परिस्थितियों में हमें आयुर्वेद को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। कार्यक्रम-प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया। अंत में प्रभारी डॉ. मनीष भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

हर दिन आयुर्वेद, हर घर आयुर्वेद' थीम पर आयुर्वेद जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

आयुष मंत्रालय भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दुगड़ के मार्गदर्शन तथा निर्देशन में 'हर दिन आयुर्वेद, हर घर आयुर्वेद' थीम पर जागरूकता कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि व्यक्ति को शारीरिक तंदुरुस्ती के साथ-साथ मानसिक रूप से भी तंदुरुस्त रहना आवश्यक है। इस दिशा में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति एक महत्त्वपूर्ण आयाम सिद्ध हो सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति भारत में सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। इस पद्धति में न केवल घरेलू उत्पादों को भी प्रयुक्त किया जा सकता है, बल्कि यह एक प्रभावशाली एवं कारगर पद्धति भी है। हमें दीर्घायु एवं निरोग बने रहने के लिए आयुर्वेद अपनाना चाहिए। उन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का समाज में अधिकाधिक फैलाव और जागरूकता पैदा करने को सबका दायित्व बताया। इस अवसर पर छात्रा हर्षिता पारीक ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने संयोजन किया तथा अंत में आभार ज्ञापन प्रभारी डॉ. मनीष भटनागर ने किया। कार्यक्रम में संस्थान के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

जीवन में अच्छी चेतना के लिए शिक्षा के साथ संस्कारों का समावेश जरूरी- आचार्यश्री महाश्रमण

कार्मिकों व विद्यार्थियों ने किए चातुर्मास प्रवास स्थल पर अनुशास्ता के दर्शन

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा है कि शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी है। शिक्षक ज्ञान का आदान-प्रदान करता है, उसमें संस्कारों का समावेश होने पर उनका मूल्य बढ जाता है। जीवन में संस्कार अच्छे होने पर चेतना भी अच्छी रहती है। वे संस्थान के कार्मिकों व विद्यार्थियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस संस्थान के नाम में जैन जुड़ा है, जो वीतरागता का सूचक है। यह धर्म व दर्शन से जुड़ा हुआ शब्द है। इस विश्वविद्यालय में शिक्षा के साथ अध्यात्म का विकास भी किया जाना चाहिए, ताकि जैन नाम की सार्थकता हो। उन्होंने विकास के लिए एकाग्रता व परिश्रम के महत्त्व को भी बताया। विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के छापर में चातुर्मास प्रवास के समय उनके दर्शनार्थ एवं उनसे पाथेय प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी स्टाफ एवं छात्राएं 2 अगस्त को छापर पहुंचे थे।

जैन व बौद्ध संस्कृतियों का परस्पर आदान-प्रदान जरूरी

पूर्व कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण को विश्वविद्यालय की प्रगति की जानकारी दी और भावी कार्यक्रमों के बारे में बताया। प्रो. दूगड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय के तत्वावधान में शीघ्र ही जैन व बौद्ध धर्म के उपदेशकों व शिक्षकों का एक सम्मेलन रखा जाएगा, ताकि दोनों संस्कृतियों का परस्पर आदान-प्रदान संभव हो सके। इसके अलावा राजस्थान की लोक-संस्कृति का एक कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की एक कांफ्रेंस शीघ्र ही आयोजित करने की जानकारी भी दी। इनके अलावा प्रो. दूगड़ ने कार्मिकों के लिए कल्याणकारी योजनाओं एवं जैनविद्या, प्राकृत व संस्कृत के सम्बंध में योजनाओं के संचालन के बारे में बताया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भी संस्थान की गतिविधियों के बारे में बताया। इस अवसर पर कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, जगदीश यायावर, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विनोद कस्वा, प्रगति चौरड़िया, डॉ. आयुषी शर्मा, डॉ. जेपी सिंह, पंकज भटनागर, दीपाराम खोजा आदि उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता दिवस मनाया

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस पर झंडारोहण दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर उन्होंने आगामी 2047 में आने वाली स्वतंत्रता की हीरक जयंती तक देश को प्रगतिवान देशों में खड़ा करने के राष्ट्रीय संकल्प के लिए सभी जनों से अपने-अपने कर्तव्य-स्थल पर पूर्ण निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता बताई और कहा कि हर काम के लिए समयबद्धता जरूरी है, तभी देश आगे बढ सकता है। इस अवसर पर एनसीसी की छात्राओं ने परेड की और ध्वज को सलामी दी। राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान के साथ देशभक्तिपूर्ण कविता एवं गीतों की प्रस्तुति भी दी गई। कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी आरके जैन, प्रो. बीएल जैन आदि के साथ समस्त स्टाफ व छात्राएं उपस्थित रहे।

एनसीसी छात्रा निशा का दिल्ली की गणतंत्र दिवस परेड के लिए चयन

आगामी गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाने वाले दिल्ली में लालकिला के सामने आयोजित समारोह (आरडीसी) के दौरान विशिष्ट प्रस्तुति के लिए संस्थान में संचालित नेशनल कैडेट कोर की 3 राज बटालियन की एनसीसी छात्रा निशा का चयन किया गया है। लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि एनसीसी के 61 हजार कैडेट्स में से राजस्थान से कुल 24 कैडेट का राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस समारोह में होने वाले गणतंत्र परेड में एनसीसी की परेड के लिए चयन किया गया, जिसमें नागौर जिले के लाडनूं आचार्य कालू कन्या विद्यालय की छात्रा निशा चयनित की गई है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ इस कैडेट को शुभकामनाएं दी है।

धैर्य व्यक्ति को सही राह दिखाता है-कुलपति

क्षमापना दिवस पर समारोह का आयोजन

क्षमापना दिवस पर संस्थान में 1 सितम्बर को आयोजित क्षमापना समारोह कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी मैत्री दिवस की चर्चा हुई है। यह क्षमायाचना ही नहीं बल्कि क्षमा के आदान-प्रदान का दिवस है। इसमें मूल शब्द खम्मत-खामणा है, जिसका अर्थ होता है, मैं क्षमा मांगता हूं और क्षमा देता हूं। आज विश्व में दो मूल्य सबसे ज्यादा चर्चित हैं और वे हैं संयम और धैर्य। 'संयम' जैन धर्म से निकला है। सब प्राणियों के प्रति संयम रखने का मतलब है कि दया, करूणा व अहिंसा के भाव पनपना। 'धैर्य' का इस आपाधापी के समय में बहुत महत्व है। आज जब कोई भी इंतजार नहीं करना चाहता, ऐसे में धैर्य का सिद्धांत व्यक्ति को सही राह दिखाता है। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों एवं शैक्षणिक व गैरशैक्षणिक कार्मिकों से भी खम्मत-खामणा किया। कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने क्षमापना दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाए जाने एवं पूरे विश्व में अहिंसा का सदेश देने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि क्षमा सर्वकालिक व सर्वव्यापी है। क्षमा को उत्सव के रूप में मनाया जाना एक विशेष बात है। यह अहिंसा का रूपान्तरण है। यह मन की विशालता और मजबूती का आगाज है। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा, क्षमावाणी द्वारा जैनधर्म को जनधर्म बनाने का मार्ग प्रशस्त होता है। यह अहंकार छोड़ने का पर्व है। प्रो. बीएल जैन, वित्ताधिकारी आरके जैन, डॉ. लिपि जैन, अच्युतकुमार जैन, प्रज्ञा राजपुरोहित व तेजस्विनी शर्मा, हर्षिता पारीक ने भी अपने विचार क्षमापर्व पर व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराजसिंह खंगारोत ने किया।

छात्रा स्मृति कुमारी ने संसद में किया राजस्थान का प्रतिनिधित्व

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय तथा युवा एवं खेल मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित कार्यक्रम के तहत संसद में अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए संस्थान की छात्रा स्मृति कुमारी को 14 नवम्बर को अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला सहित विभिन्न प्रमुख नेताओं व महत्त्वपूर्ण लोगों के बीच स्मृति कुमारी ने अपने विचार रखे।

स्मृति ने अपने सम्बोधन में राष्ट्रीय नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। देश भर से चयनित किए गए 10 विद्यार्थियों की सूची में स्मृति का चयन पहली बार जिला स्तर पर किया गया, जिसमें उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया था। यह छात्रा संस्थान में बीए-बीएड में अध्ययनरत हैं। इस सफलता पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उसे बधाई दी और उत्तरोत्तर प्रगति की शुभाशंसा व्यक्त की है।

प्रो. बी.एल. जैन बने विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार

संस्थान के रजिस्ट्रार पद पर वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. बी.एल. जैन ने पदभार ग्रहण किया है। यहां इस पद पर इससे पूर्व कार्यरत रमेश कुमार मेहता ने उन्हें कार्यभार सुपुर्द किया। प्रो. जैन विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष पद पर भी लम्बे समय से कार्य कर रहे हैं। मेहता को इससे पूर्व मंगलभावना समारोह आयोजित करके विदाई दी गई थी। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका शॉल ओढा कर व समृति चिह्न भेंट करके सम्मान किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के लेखाकार सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल को भी सेवानिवृत होने पर विदाई दी गई। कुलसचिव के रूप में पदभार ग्रहण करने पर प्रो. जैन का स्वागत भी इस अवसर पर किया गया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उनके लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर व्यक्ति अपनी विशेषताओं के लिए याद रखा जाता है। रस्मी तौर पर विदाई होने के बावजूद ये हम सबके दिलों में सदैव स्मरणीय रहेंगे। कार्यक्रम को प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, आरके जैन, रमेश कुमार मेहता, सुरेन्द्र कुमार काशलीवाल आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। कार्यक्रम में सभी संकायों के सदस्य एवं शिक्षकेत्तर कार्मिकगण उपस्थित रहे।

मनुष्यता के विकास के लिए संवेदना को बनाएं शिक्षा का मूल- प्रो. नलिन

पांच दिवसीय शिक्षक पर्व के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में संचालित किए जाने वाले पांच दिवसीय शिक्षक-पर्व के शुभारम्भ महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में छात्राओं की ओर से 5 सितम्बर को आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि संवेदना हमारी शिक्षा का मूल होना चाहिए, लेकिन आज असंवेदना बढ रही है और आदमी संवेदनाशून्य होता जा रहा है। शिक्षक के पास मनुष्य का परिष्कार करने का दायित्व है और इसी से वह मनुष्य को मनुष्य बना सकेगा। उन्होंने कहा कि आज हर सवाल को गूगल पर सर्च किया जा सकता है, तो शिक्षक की आवश्यकता को कायम रखने के लिए जरूरी है कि गूगल का बेहतर उपयोग और मशीनी बटनों की उपयोगिता को शिक्षक विद्यार्थी के लिए सकारात्मक बनाकर उसमें संवेदनाओं का निर्माण करे।

शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन

रजिस्ट्रार रमेशकुमार मेहता ने शिक्षा की कोई उम्र नहीं होने की बात कहते हुए कहा कि व्यक्ति को जीवन भर सीखना ही चाहिए और जब भी जिससे भी सीखा जाए, उसके प्रति कृतज्ञ होना भी आवश्यक है। उप रजिस्ट्रार विनीत सुराणा ने शिक्षकों को हमेशा कुछ न कुछ सिखाने वाला और प्रेरणा देने वाला बताते हुए उनके प्रति आदर-सत्कार आवश्यक बताया। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को छात्राओं द्वारा पौधे लगे गमलों का उपहार प्रदान करके पर्यावण जागरूकता का उदाहरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों के लिए पहचान व कुर्सी-दौड़ की अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन भी छात्राओं ने रखा, जिनमें विजेता रहे शिक्षकों को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में उर्मिला, उषा एवं समूह, आशीष शर्मा, निकीता व कविता, हेमपुष्पा व सुनीता चौधरी ने नृत्य प्रस्तुत किए। सपना व अभिलाषा ने कॉमेडी प्रस्तुत की। अभिलाषा, ऐश्वर्या व प्रियंका ने कविता प्रस्तुत की। नफीसा, खुशी जोधा, प्रियंका सोनी, निकिता, वृंदा दाधीच व आकांक्षा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रियंका व तनिष्का भोजक ने गीत प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में सुनीता ने गुरूवंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन हेमपुष्पा चौधरी, अभिलाषा, निकिता, भावना व कुसुम ने किया।

छात्राओं ने संभाला शिक्षक और प्राचार्य का कार्यभार

शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले श्रृंखलाबद्ध 5 दिवसीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रथम दिवस आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में छात्राओं ने

शिक्षक की भूमिका में महाविद्यालय का कार्यभार संभाला। छात्रा विमला ने प्राचार्य की भूमिका का निर्वहन करते हुए प्राचार्य-कक्ष में बैठकर प्राचार्य पद के महत्त्व एवं जिम्मेदारियों को करीब से जाना-समझा। उन्होंने महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के साथ चलकर छात्राओं द्वारा संचालित की जा रही सभी कक्षाओं का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए शिक्षक जीवन के महत्त्व एवं शिक्षक कर्तव्य को विस्तार से व्याख्यायित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण व सह-संचालक प्रेयस सोनी ने किया।

परिचर्चा, संगोष्ठी व वृतचित्र प्रदर्शन

शिक्षा विभाग में आयोजित पैनल परिचर्चा के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि एक शिक्षक को पाठ्यचर्या, शिक्षण तिथि, तकनीकी प्रयोग, कौशल शिक्षा, बहुभाषिता के संदर्भ में नवीन आयामों में दक्षता प्राप्त करनी होगी। एक शिक्षक को बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए। पैनल परिचर्चा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति : शिक्षक हेतु नवीन चुनौतियां' विषय पर प्रशिक्षणार्थियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये तथा शिक्षक के संबंध में नवीन चुनौतियों पर परिचर्चा की। इनमें नितेश जांगिड़, कंचन, मलीचा मिश्रा, ऐश्वर्या सोनी, हंसा कंवर, पूनम, उर्मिला प्रमुख थे।

दो डोक्यूमेंट्री दिखा कर भारतीय ज्ञानतंत्र बताया

इससे पूर्व 'भारतीय ज्ञान तंत्र में शिक्षकों की भूमिका' पर आधारित दो डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। इन वृत्तचित्रों का समस्त प्रशिक्षणार्थियों ने अवलोकन

करते हुए भारत के प्रमुख दस विश्वविद्यालयों तथा प्रमुख प्राचीन वैज्ञानिकों के योगदान के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस सम्बंध में प्रो. बीएल जैन ने कहा कि देश की प्राचीन ज्ञान परंपरा विशिष्ट, अनुकरणीय तथा विशाल रही है, जिसके प्रमुख संवाहक कालिदास, भवभूति, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, चरक, महर्षि अगस्त्य, कणाद एवं पतंजलि जैसे प्रमुख ज्ञान भट्ट रहे हैं। डॉ. भावाग्राही प्रधान ने आधुनिक सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के संसाधनों, ई-लर्निंग, ई-पुस्तकालय, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम आदि की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन तथा आभार ज्ञापन समन्वयक डॉ. गिरिराज भोजक ने किया।

प्राचीन भारतीय शैक्षिक मूल्य व वैश्विक बाजारवाद पर परिचर्चा

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में गुरु-शिष्य संबंध पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। अतिथि वक्ता के रूप में छात्राओं ने भारतीय संस्कृति की गुरु-शिष्य परंपरा की महानता को उजागर किया। साथ ही उन्होंने वैश्वीकरण और बाजारवाद से शैक्षिक मूल्यों में आए परिवर्तनों को भी उल्लेखित किया। परिचर्चा में छात्राओं ने शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता और ऑनलाइन एजुकेशन की कमियों में सुधार की गुंजाइश पर भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने सभ्यता, तकनीकी सुभीतों एवं भारतीय संस्कृति के मध्य समन्वयकारी सोच को एक भारत, श्रेष्ठ भारत की नीति का पोषक बताया। अंत में कार्यक्रम के सह संयोजक प्रेयस सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। परिचर्चा का संचालन छात्रा तेजस्विनी शर्मा द्वारा किया गया।

हिन्दी भाषा में समसामयिक विषयों की प्रस्तुति पर संगोष्ठी

कार्यक्रम-श्रंखला में 'विभिन्न समसामयिक समस्याओं की हिंदी भाषा में प्रस्तुति' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें नारी शिक्षा का महत्त्व, साइबर क्राइम, नशामुक्ति की अवधारणा, कन्या भ्रूण हत्या, महिला अपराधों में हुई बढ़ोतरी, स्वच्छ-भारत अभियान की महत्ता, संसाधनों का अतिशय प्रयोग हानिकारक, मतदाता जागरूकता अभियान की महत्ता, भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का महत्त्व आदि उप विषयों पर छात्राओं निकिता चौधरी, कोमल मुंडेल, खुशी जोधा, तेजस्विनी, ममता गोरा, हेमपुष्पा चौधरी, अभिलाषा स्वामी, प्रियंका सोनी, सीमा स्वामी, संतोष ठोलिया, कांता सोनी एवं प्रियंका स्वामी आदि ने अपने विचार रखे। अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने भी विचार प्रकट किए। अंत में डॉ. बलवीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गुरू-शिष्य सम्बंधों पर कार्यशाला आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में शिक्षक पर्व के अंतिम दिन गुरु-शिष्य संबंधों पर एक कार्यशाला का आयोजन रखा गया। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भारतीय सनातन जीवन मूल्यों में निहित गुरु के महत्त्व की व्याख्या करते हुए धर्मपाल-कुमारिल, शंकराचार्य-सुरेश्वराचार्य, कृष्ण-अभिमन्यु, द्रोणाचार्य-अर्जुन, वल्लभाचार्य-सूरदास, नरहरीदास-तुलसीदास, कुमारिलभट्ट-मंडन मिश्र, गुरु रामदास-छत्रपति शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस-विवेकानंद के साथ आचार्य तुलसी-आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाप्रज्ञ-आचार्य महाश्रमण तक की आदर्श एवं स्वस्थ गुरु-शिष्य परंपराओं के महत्त्व को विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। कार्यशाला में छात्राओं ने भी गुरु रामदास-शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस-विवेकानंद, गुरु द्रोणाचार्य-अर्जुन आदि से संबंधित ऐतिहासिक प्रसंगों पर नाट्य प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण ने किया। अंत में कार्यक्रम सह-संयोजक प्रेयस सोनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'तारे जमीन पर' और 'लेट्स गो टू स्कूल' फिल्मों का प्रदर्शन

इसी श्रृंखला में छात्राओं को गुरु-शिष्य संबंधों के आदर्श पर आधारित हिंदी फिल्म 'तारे जमीन पर' दिखाई गई। स्मार्ट बोर्ड के जरिए छात्राओं के लिए इस फिल्म का प्रसारण किया गया। कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण व सह संयोजक प्रेयस सोनी ने बताया कि छात्राओं में फिल्म को लेकर अच्छा उत्साह रहा। शिक्षा विभाग में अध्ययनरत छात्रध्यापिकाओं को 'लेट्स गो टू स्कूल' फिल्म दिखाई गई। शिक्षा का महत्त्व एवं जीवन-संघर्ष को प्रदर्शित करने वाली इस फिल्म में एक लड़की के संघर्ष को चित्रित किया गया है। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने उन्हें प्रेरित किया तथा छात्रध्यापिका ऐश्वर्या सोनी ने शिक्षक पर्व की गतिविधियों को प्रेरणादायी बताया। अंत में डॉ. गिरीराज भोजक ने पांच दिवसीय शिक्षक पर्व की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

विश्व शांति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

शांति स्थापना के लिए नकारात्मक वातावरण दूर करें- एसडीएम गढवाल

अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 21 सितम्बर को सेमिनार हॉल में विश्वशांति दिवस कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपखण्ड अधिकारी अनिल कुमार गढ़वाल ने मानवता, भ्रातृत्व-भाव व प्रेम को शांति का प्रमुख सूत्र बताते हुए जीवन में मानवीयता व इंसानियत को महत्त्व देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे आस-पास के नकारात्मक वातावरण को समाप्त कर ही हम शांति को स्थापित कर सकते हैं। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वर्तमान दौर में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों के बावजूद सम्पूर्ण पृथ्वी पर अशांति का वातावरण व्याप्त है एवं अशांति की आशंकाएं निरन्तर बनी हुई हैं। उन्होंने अशांति के कारणों पर चर्चा करते हुए कहा कि संघर्ष, सत्ता की लालसा, योग्यतम बनने की चाह के साथ व्यवस्थागत, धार्मिक एवं जातिगत संघर्ष आदि इसके मूल कारण हैं। प्रो. दूगड़ ने शांति की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए शांति के स्थायित्व हेतु एकाकी जीवन के बजाय अनेकान्त की व्यापकता को जरूरी बताया। प्रो. दूगड़ ने कहा कि आज सबसे अधिक आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने वैयक्तिक प्रयासों के प्रति भी सजग बने, इससे ही समुदाय, धर्म, प्रकृति आदि के बीच शांति स्थापित हो सकेगी।

शांति प्रयासों में विशिष्ट प्रयोग रही अहिंसा यात्रा

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि शहर काजी मोहम्मद मदनी अशरफी ने साम्प्रदायिक सौहार्द एवं विश्वशांति के सन्दर्भ में अपने विचार रखे। संस्थान के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने भगवान महावीर, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के शांति अवदानों को मानवता के लिए वरदान बताते हुए संस्थान अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की अहिंसा-यात्रा को शांति के प्रयासों में एक विशिष्ट प्रयोग बताया। छात्रा हेमकंवर ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारम्भ छात्रा कल्पना सोनी व निशा पारीक द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से किया गया। इससे पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड़ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, डॉ. बलवीर सिंह आदि ने किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद, व्यापार मंडल के अध्यक्ष सुशील पीपलवा, रमेश गौड़ सहित नगर के गणमान्यजन, समस्त संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने किया एवं अंत में आभार ज्ञापन डॉ. बलवीर सिंह ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 10 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के उद्देश्यों के साथ मानवाधिकारों की अवधारणा पर प्रकाश डाला। सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एज्युकेशन (सीडीओई) के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मानवाधिकार केवल एक राष्ट्र तक सीमित नहीं होकर संपूर्ण सृष्टि के मानव मात्र से उनका संबंध है। मानवाधिकारों की रक्षा के लिए देश में अनेक आयोग एवं संस्थान कार्यरत हैं। कार्यक्रम में संस्थान के विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया और अंत में डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

निर्भय और निडर होकर हमें अहिंसक नीति पर चलना चाहिए- थानाधिकारी राजेंद्र सिंह कमांडो

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थानाधिकारी राजेंद्र सिंह कमांडो ने अहिंसा को हिंसा से अधिक प्रभावशाली शस्त्र और सुनिश्चित सफलता का तरीका बताया और कहा कि हमें निर्भय और निडर होकर अहिंसक नीति पर चलना चाहिए। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान की इस बात के लिए सराहना की कि शांति तथा अहिंसा के क्षेत्र में शिक्षण तथा प्रशिक्षण प्रदान करके समाज में अहिंसक जीवन मूल्यों का प्रचार प्रसार करने में संस्थान अग्रणी भूमिका निभा रहा है और गांधी दर्शन तथा जैन दर्शन में समावेशित जीवन मूल्यों को केवल भारत ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रचारित-प्रसारित करने में योगदान प्रदान कर रहा है। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने इस अवसर पर गांधीजी तथा लाल बहादुर शास्त्री के व्यक्तित्व से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.बीएल जैन ने कहा कि हम अहिंसा के मार्ग पर चलकर हिंसा के बढ़ते प्रभाव को सहज रूप से कम कर सकते हैं। आज भी अहिंसा का विचार प्रासंगिक है। योग और जीवन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि योग के माध्यम से अपने पूर्वाग्रहों का त्याग कर व्यक्ति अहिंसक मार्ग पर चल सकता है तथा जीवन शैली में अहिंसक प्रवृतियां कैसे अपनाई जा सकती है। छात्रा हर्षिता पारीक ने भी इस विषय में अपने विचार व्यक्त किए। मनीषा तुनगरिया ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने स्वागत वक्तव्य तथा विषय परिचय प्रस्तुत किया। 'रघुपति राघव राजा राम' भजन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने करते हुए बताया कि वर्तमान समस्याओं का निराकरण महात्मा गांधी द्वारा बताई गई संयमित जीवनशैली से ही संभव है। अंत में डॉ.बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

युवा शिविर में दिया अहिंसा व शांति का प्रशिक्षण

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 30 सितम्बर को युवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कस्बे के लाड मनोहर उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर के बौद्धिक सत्र में मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने 'युवा एवं अहिंसा की नीति' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि अहिंसा एक पद्धति और नीति ही नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली आधार भी है। अहिंसा को जीवन में अपनाकर एक श्रेष्ठ नागरिक बना जा सकता है।

शिविर के क्रियात्मक सत्र में योग एवं जीवन विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद सियाग ने सभी शिविरार्थियों को योग का प्रशिक्षण व अभ्यास करवाया। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने अहिंसा के नीतिगत प्रावधानों पर प्रकाश डाला तथा अहिंसा को एक अति शक्तिशाली किन्तु सहज उपाय बताया। शिविर के आखिर में प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा बताया कि शिविर काफी लाभदायक रहा। शिविर के प्रारम्भ में सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ छात्रा हेम कंवर ने अणुव्रत गीत से किया। सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विभाग के छात्र धीरज, हरूनिशा, उषा, पूनम, मनीषा

उड़ीसा के भुनेश्वर में अंतर विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता में दो टीमें शामिल

कलिंगा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भुवनेश्वर (उडीसा) में 26 से 29 दिसंबर तक आयोजित हुए अंतरविश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता में जैन विश्वभारती संस्थान की महिला तथा पुरुष वर्ग की 2 टीमें योगासन प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए संस्थान के कोच दशरथ सिंह के नेतृत्व में गई। कुलसचिव प्रो. बी.एल.जैन ने प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने के लिए शुभकामनाएं दीं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी, उप-कुलसचिव विनीत सुराणा, वित्ताधिकारी आर. के.जैन योग तथा जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.प्रद्युम्न सिंह शेखावत, खेल समन्वयक डॉ.रविंद्र सिंह राठौड़, खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह आदि ने भी शुभाशंषााए व्यक्त की।

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए सहायक हैं योग के प्रयोग

स्थानीय श्री बापूजी नर्सिंग कॉलेज में आयोजित ''योग जागरूकता शिविर'' में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. विनोद कस्वां ने योग के विविध आयामों के बारे में बताया और प्रायोगिक अभ्यास करवाए। शिविर में डॉ. विनोद ने योग के मुख्य अंग आसन का प्रयोग करके स्वस्थ रहने के उपाय बताए तथा कहा कि कोरोना महामारी से बचने के लिए आसन व प्राणायाम करके अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास करने का सफल प्रयोग देश भर में किया गया था। उन्होंने बताया कि ध्यान द्वारा मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। शिविर में कॉलेज के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भाग लिया और उत्सुकता के साथ आसन एवं सूक्ष्म क्रियाओं का अभ्यास किया।

आईक्यूएसी

नई शिक्षा नीति में समाहित रहेंगे रोजगार बढाने के अवसर- प्रो. यादव

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. आरएस यादव ने कहा है कि नई शिक्षा नीति-2020 के तहत 2025 तक 50 प्रतिशत विद्यार्थी स्कूली और उच्चतर शिक्षा के दौरान वोकेशनल कोर्सों से परिचित हो जाएंगे। वोकेशनल कोर्स करने वाले दक्ष युवाओं की देश को आवश्यकता है। डिप्लोमा से स्नातक तक ऐसे कई कोर्स हैं जो विभिन्न व्यवसायों से जुड़े हैं और इनसे विद्यार्थियों को अपार संभावनाएं मिल सकती हैं। वे यहां संस्थान में इंटर्नल क्वालिटी एक्यूरेंस सेल के तत्त्वावधान में 7 जुलाई को आयोजित संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों की मैकाले शिक्षा नीति एक बहुत सोची'समझी साजिश थी, जिसने भारतीयों की मानसिकता को दास बनने की सोच तक सीमित कर दिया। मानव को अच्छा मानव बनाने के स्थान पर यांत्रिक मानव बना दिया, भारतीय संस्कृति तथा संस्कार के अनुगमन के स्थान पर आधुनिकता के अंधे अनुकरण की ओर धकेल दिया। जिससे परिवार और समाज मे भयंकर विकृति पैदा हो गयी। हमारे ऋषि मुनियों एवं विषय विद्वानों ने बहुत दूरदर्शिता से प्रामाणिक शिक्षा व्यवस्था दी थी, लेकिन कालांतर में इसको नजरअंदाज कर दिया गया। नई शिक्षा नीति 2020 में पुनः इसे केन्द्रित रखते के लिए विद्यार्थियों के समग्र एवं सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखा गया है। इस शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से रोजगार में अद्भुत अवसर बढ़ेंगे, क्योकि इस नीति में व्यक्तित्व निर्माण, स्वरोजगार तथा स्वालम्बन का पूर्णतः ध्यान रखा गया है। यह शिक्षा नीति सुनहरे भविष्य की बुनियाद रखने वाली है, क्योंकि व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा विद्यार्थियों को तत्काल आत्मनिर्भर बनाने वाली है, इसे सुपरिणाम सुनिश्चित है। कार्यशाला का संयोजन आईक्यूएसी के निदेशक डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने प्रारम्भ में विषय वस्तु पर प्रकाश डाला तथा कार्यशाला का संयोजन किया। कार्यशाला में देशभर के प्रमुख विद्वान शिक्षाविद सम्मिलित रहे।

जैनागमों में ज्योतिषीय सिद्धान्तों का अद्भुत प्रयोग- डॉ. श्रीमाल

राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में जैन आगम में ज्योतिष पर व्याख्यान प्रस्तुत

'ज्योतिषीय तत्त्व सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्राप्त होते हैं। खगोलीय तत्त्व, ग्रह, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि ऐसे तत्त्व हैं, जो ज्योतिष विद्या के मुख्य तत्त्व माने जाते हैं। ज्योतिष विद्या के विकास में सभी धर्मों का योगदान रहा है, उनमें से जैन धर्मशास्त्रों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यह विचार केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, अगरतला के डॉ. मनोज श्रीमाल ने 27 अगस्त को संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के 14वें व्याख्यान में व्यक्त किये। डॉ. श्रीमाल ने जैन आगमों के साथ ही अनेक स्वतंत्र ग्रंथों का भी उल्लेख किया, जिनमें ज्योतिषीय सिद्धान्तों का विस्तार से वर्णन हुआ है। उन्होंने ज्योतिष की परिभाषा बताते हुए कहा कि यह विद्या व्यक्ति को भूत, भविष्य के विषय में बताती है तथा उसको कर्म-प्रधान बनाने पर जोर देती है। जैन ज्योतिष का विभाजन 5 स्कन्धों में किया गया है, जिनमें ज्योतिष से सम्बन्धित सिद्धांत वर्णित हैं। ज्योतिष विद्या की उपयोगिता को बताते हुए डॉ. श्रीमाल ने कहा कि यदि हमें सुख-शान्ति पूर्वक व्यवस्थित जीवन जीना है, तो हमें जैन ज्योतिष को सम्यक् रूप से समझकर उसके सिद्धान्तों की अनुपालना करनी चाहिए। उन्होंने जैन पंचांग प्रणाली को भी अति प्राचीन बताते हुए उसकी अनेक विशेषताओं का उल्लेख किया तथा कहा कि जैन ज्योतिषीय सिद्धान्तों को नासा ने भी स्वीकार्य किया है। अध्यक्षीय वक्तव्य में विभागाध्याक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि ज्योतिषीय सिद्धान्त भगवान महावीर के जीवनकाल में भी देखने को मिलते थे। उन्होंने आज के युग में ज्योतिष शास्त्रों के सम्यक् रूप से अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अनेक उदाहरणों से उक्त तथ्य को सिद्ध किया। प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य सह-आचार्या डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। इससे पूर्व छात्र पवित्र जैन ने मंगलाचरण करके कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत भाषा को संविधान की मानक भाषाओं की सूची में शामिल किया जाए- प्रो. सिंघवी

'प्राकृत का विकास : समस्याएं और समाधान' पर व्याख्यान आयोजित

'प्राकृत का विकास : समस्याएं और समाधान' विषय पर 26 नवम्बर को आयोजित विशेष व्याख्यान में मुख्य वक्ता प्रो. सुषमा सिंघवी ने प्राकृत भाषा को रोजगारोन्मुख बनाने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों में प्राकृत भाषा के पर्याप्त अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था होनी आवश्यक है। उन्होंने यहां संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में बोलते हुए आगे कहा कि प्राकृत भाषा के विकास में इसका संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल न होना सबसे बड़ी समस्या है, जबकि यह भाषा भारत के गौरव को बढ़ाने वाली प्रमुख भाषा है। आज अनेक लोग प्राकृत भाषा के बारे में नहीं जानते, क्योंकि वर्तमान में विश्वविद्यालयों, कॉलेजों एवं स्कूल स्तर पर प्राकृत का ज्ञान नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्राकृत भाषा के सम्बंध में विभिन्न चयनित विषयों पर शोध की आवश्यकता भी है। यद्यपि इस कार्य में जैन विश्वभारती संस्थान जैसे अनेक प्रमुख संस्थान लगे हुए हैं।

तकनीक व लघु पाठ्यक्रमों से संभव है प्रसार

प्रो. सिंघवी ने कहा कि प्राकृत भाषा का एक मानक रूप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। अपने इतिहास की प्रामाणिक जानकारी के लिए प्राकृत भाषा को जानना जरूरी है। उन्होंने प्राकृत भाषा के विकास के लिए प्राकृत भाषा में छोटे-छोटे कोर्स बनाए जाने तथा उनमें कहानियों का प्रयोग अधिक से अधिक किए जाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि प्राकृत साहित्य में वर्णित विषयों को लेकर छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी जानी चाहिएं। इस भाषा के विकास के लिए भाषा-प्रौद्योगिकी के प्रयोग की भी आवश्यकता है। आधुनिक तकनीक द्वारा इस भाषा को जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि जिस प्रकार देश संविधान से चलता है, उसी प्रकार भाषा का संविधान व्याकरण होता है। अतः प्राकृत भाषा के विस्तार के लिए प्राकृत व्याकरण का सम्यक् अध्ययन करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्राकृत को समझने के लिए संस्कृत व्याकरण को भी समझना आवश्यक है। प्रो. शास्त्री ने प्रो. सिंघवी की इस बात पर सहमति जताई कि प्राकृत अनेक रूपों में प्रचलित है, इसलिए प्राकृत के अनेक रूपों में से एक रूप को मानक भाषा के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्र आकर्ष जैन के मंगलाचरण से किया गया। स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रस्तुत किया, कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा अन्त में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सव्यसाची सारंगी ने किया। इस व्याख्यान कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

हजारों साल पूर्व जनभाषा रही प्राकृत का आधुनिक पद्धति से अध्ययन जरूरी- डॉ. प्रियदर्शना जैन

भारतीय संस्कृति को जानना और समझना है, तो प्राकृत को जानना और समझना होगा। प्राकृत भाषा की आज उपेक्षा हो रही है, इसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। यदि भारत को पुनः विश्वगुरू बनाना है तो प्राकृत भाषा और साहित्य का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना होगा। वे विचार संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 30 जुलाई को आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित 'प्राकृत भाषा : अतीत एवं वर्तमान' विषयक विशेष व्याख्यान में मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. प्रियदर्शना जैन ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्राकृत भाषा जनभाषा के रूप में हजारों वर्ष पहले से विद्यमान रही है और आधुनिक भाषा की जननी के रूप में भी प्राकृत भाषा ही रही है। उन्होंने प्राकृत भाषा को मातृभाषा में पढाने पर तथा आधुनिक पद्धति को भी प्राकृत के अध्ययन में शामिल करने पर जोर दिया। इस अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि प्राकृत भाषा को जानने और समझने के लिए हमें समर्पित भाव से इसका अध्ययन करना पडेगा। साथ ही प्राकृत के साथ-साथ संस्कृत को भी जानना और समझना चाहिए। कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्रा अदिति के मंगलाचरण से हुआ।

स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने दिया तथा कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी इस व्याख्यान के अन्तर्गत किया गया।

भारतीय संस्कृति के रक्षण के लिए आगम-सम्पादन आवश्यक- प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

व्याख्यान में दिया आगमों की पाण्डुलिपियों को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने पर जोर

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 22 दिसम्बर आयोजित 'प्राकृत आगम-सम्पादन : समस्याएं एवं समाधान' नामक विशेष व्याख्यान के अन्तर्गत बोलते हुए प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में वैदिक, जैन एवं बौद्ध ये तीन धाराएं अनवरत रूप से प्रवाहमान है। जैन-परम्परा के शास्त्र आगमों के रूप में प्रसिद्ध है और इन आगमों में भगवान महावीर की वाणी निबद्ध है। उन्होंने इन आगमों में भारतीय संस्कृति के विविध आयामों को उद्घाटित किया है। लेकिन, आगमों का सम्पादन-कार्य नहीं होने या प्रासंगिक रूप में न होने के कारण इन आगमों में निहित ज्ञान-राशि को आमजन ग्रहण नहीं कर पाते हैं। उन्होंने आगम-सम्पादन की महनीय आवश्यकता बताते हुए आगमों की पाण्डुलिपियों को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने पर भी जोर दिया तथा कहा कि उन पाण्डुलिपियों का सही रूप में सम्पादन किया जाना आवश्यक है, उन आगमों में वर्णित हमारी संस्कृति को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने व्याख्यान की अध्यक्षता करते हुए आगम-सम्पादन में बहुत अधिक ध्यान देने योग्य बातों पर जोर दिया तथा भाषा एवं व्याकरण का ज्ञान होने पर भी बल देते हुए कहा कि इसके अभाव में अर्थ का अनर्थ हो सकता है। उन्होंने अनेक उदाहरणों के माध्यम से सम्पादन एवं अनुवाद की महत्ता को समझाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुमुक्षु बहनों के मंगलाचरण से हुआ, स्वागत एवं संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सब्यसाची सारंगी ने किया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

गाथासप्तशती में है प्राकृत साहित्य का सार- डॉ. राजश्री मोहाडीकर

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के अन्तर्गत ''भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 29 अक्टूबर को 'प्राकृत साहित्य में गाथासप्तशती का महत्त्व' शीर्षक से विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता संस्कृत-प्राकृत विभाग, पूना विश्वविश्वमालय की सेवानिवृत्त सहायक आचार्या डॉ. राजश्री राजन मोहाडीकर ने प्राकृत साहित्य का संक्षिप्त परिचय बताते हुए उसमें निहित अनेक ग्रंथ-रत्नों का वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया और गाथासप्तशती को सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ-रत्न बताया। उन्होंने बताया कि गाथासप्तशती में सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य का सार निहित है। इस ग्रंथ में जीवन के सभी पक्षों को उजागर किया गया गया है। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी गाथासप्तशती के महत्त्व को प्रतिपादित किया तथा सभी को गाथासप्तशती का सम्यक् रूप से अध्ययन करने पर जोर दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सब्यसाची षड़ंगी ने किया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत पाण्डुलिपियों की सम्पादन-कला में व्याकरण और विषय पर पूरा ध्यान आवश्यक- डॉ. उत्तमसिंह

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा संचालित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 24 सितम्बर को ''प्राकृत पाण्डुलिपियों की सम्पादन-कला' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस विशेष व्याख्यान के मुख्य वक्ता केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अगरतला परिसर के बौद्ध दर्शन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. उत्तम सिंह ने पाण्डुलिपियों के विषय में अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियां देते हुए कहा कि पाण्डुलिपियों के रखरखाव की विशेष आवश्यकता है, ताकि शोधार्थियों द्वारा इन पर शोधकार्य किया जा सके और इन्हें सम्पादित किया जाकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। उन्होंने कहा कि इन पाण्डुलिपियों में अथाह ज्ञान-राशि निहित है, जैसे व्याकरण, विषयवस्तु आदि। अतः इनके सम्पादन में अनेक बातों का ध्यान रखना चाहिए। पाण्डुलिपि किस समय में लिखी गई का ज्ञान भी सम्पादन कला में आवश्यक है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. दामोदर शास्त्री ने भाषा एवं व्याकरण पर विशेष जोर दिया और बताया कि पाण्डुलिपियों का सम्पादन बहुत कठिन कार्य है। इस कार्य को अत्यधिक सावधानी रखते हुए करना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने दिया तथा संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्रतिक्रमण के प्रयोग से संभव है विभिन्न असंभव रोगों का इलाज- डॉ. संगीतप्रज्ञा

अध्यात्म विज्ञान सम्बंधी विश्व सम्मेलन में समणियों की सहभागिता

डाक्टर्स फॉरम, एनिमल वेलफेयर सोसायटी ऑफ इंडिया एवं ज्ञानसागर साईंस फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 3-4 दिसम्बर को आयोजित वर्ल्ड कांफ्रेंस ऑन स्प्रिचुअल साईंस को आयोजित किया गया। कांफ्रेंस के संयोजक डॉ. डीसी जैन ने विश्वभर के आध्यात्मिक विद्वानों के शोध-आलेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया, जिनमें जैन विश्वभारती संस्थान से डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा एवं समणी जिज्ञासाप्रज्ञा भी आमंत्रित थी। डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा द्वारा 'स्वस्थ जीवन का आधार प्रतिक्रमण' विषय पर प्रस्तुत शोध-आलेख को सभी ने सराहा। डॉ. संगीतप्रज्ञा ने अपने पत्रवाचन में बताया कि जो अपनी भूल को भूल नहीं मानता, वह अन्दर ही अन्दर भयभीत, दुःखी व तनावग्रस्त होता है। क्रोध एवं चिड़चिड़ेपन से लीवर और गॉलब्लेडर, भय से गुर्दे एवं मूत्राशय, तनाव एवं चिन्ता से तिल्ली, पेंक्रियाज और आमाशय तथा अधीरता एवं आवेग से हृदय एवं छोटी आंत तथा दुःख से फेफड़े एवं बड़ी आंत की क्षमता घटती है। यदि शारीरिक तंत्रिका तंत्र, नाड़ी-तंत्र आदि पूरे शरीर को स्वस्थ रखना है, तो क्रोध को क्षमा में बदलना होगा, अभय की साधना करनी होगी, शान्त और सुखी जीवन जीना होगा। नकारात्मक विचार, चिन्तन व मनन की जगह सकारात्मक विचारों को प्रश्रय देना होगा। यदि व्यक्ति सुखी व स्वस्थ जीवन जीना चाहता है तो उसे प्रतिक्रमण का शाब्दिक नहीं, हार्दिक भाव समझना होगा।

आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया है प्रतिक्रमण

उन्होंने अपने पत्रवाचन में बताया कि प्रतिक्रमण का उद्देश्य पाप का प्रायश्चित्त कर इसे कम करना है। प्रतिक्रमण और स्वास्थ्य का परस्पर गहरा संबंध है। सर्वांगीण स्वस्थता का तात्पर्य है- शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त जीवन। आत्मा की विकृतियों से ही बीमारियां होती हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए रोगोत्पत्ति के कारणों एवं निवारण के हेतुओं का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रतिक्रमण गलती को गलती मानने, जानने और छोड़ने का पुरुषार्थ है। जिस प्रकार रोगी अपने गिरे हुए स्वास्थ्य को आसन, प्राणायाम, दवाइयों का प्रयोग कर पुनः प्राप्त कर सकता है, उसी प्रकार साधक अपने व्रतों में लगे दोष से मलिन बनी आत्मा को प्रतिक्रमण से शुद्ध कर लेता है।

प्रतिक्रमण का प्रायोगिक प्रभाव

डॉ. डीसी जैन ने अपने सम्बोधन में डॉ. समणी संगीप्रज्ञा और उनके आलेख का उल्लेख करते हुए बताया कि उनके लेख को उन्होंने पढा और उसे क्रियात्मक रूप से आजमाने का फैसला किया। सभी प्रकार की चिकित्साओं से निराश एक मरीज पर इसको आजमाया भी। उस मरीज की गर्दन निरन्तर हिल रही थी। उसने बताया कि वह पूरे संसार में घूम चुका, लेकिन कहीं भी उसकी बीमारी ठीक नहीं हुई। अंतिम इलाज के बारे मे पूछे जाने पर उसने बताया कि एक चिकित्सक ने उसे बटेर पक्षी को भून-भून कर खाने की सलाह दी, जिसे करने के बाद ठीक होने के बजाए उसकी बीमारी और अधिक बढ गई। तब उस मरीज को प्रतिक्रमण करने की सलाह देकर विधि बताई गई। उस बीमार व्यक्ति ने एक महिने बाद वापस लौट कर बताया कि प्रतिक्रमण से उसका गर्दन का हिलना पूरी तरह से बंद हो गया है। समणी के इस संदेश को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इस कांफ्रेंस में संस्थान की शोध-विद्यार्थी समणी जिज्ञासाप्रज्ञा ने भी आत्मा के अस्तित्व पर अपना पत्रवाचन किया। इस विश्व सम्मेलन में भारत, नेपाल, अमेरिका आदि विभिन्न देशों से बड़ी संख्या में विद्वानों ने भाग लिया, जिनमें से करीब 50 विद्वतजनों ने अपने शोधपत्र पढे।

जीवन कौशल पर तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन

आत्मविश्वास, मोटिवेशन, स्मार्ट वर्क आदि पर हुआ गंभीरता से चिंतन

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत जीवन कौशल पर तीन दिवसीय सेमिनार का आयोजन 21-23 जुलाई को किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आत्मविश्वास, मोटिवेशन, टेलेंट, हार्ड वर्क, स्मार्ट वर्क आदि हमारे जीवन के पहलू हैं। इन्हीं के आधार पर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। स्मृति कुमारी ने 'हार्ड वर्क से बेहतर है स्मार्ट वर्क' पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्मार्ट वर्कर बनना है, तो अपनी योजना समय के हिसाब से बनानी होगी और अपने काम को प्राथमिकता देनी होगी। साक्षी शर्मा ने कहा कि मोटिवेशन हर व्यक्ति के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। कार्यक्रम का संयोजन तथा आभार ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया।

छोटे कामों को भी बड़े ढंग से करने पर व्यक्ति महान बनता है- प्रो. जैन

जीवन कौशल सेमिनार के द्वितीय दिवस अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि सफल लोग महान काम नहीं करते, वो छोटे-छोटे कामों को महान ढंग से करते हैं। सेमिनार में हर्षिता पारीक ने अध्यात्म और संस्कृति विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्कृति, संस्कार और अध्यात्म से मानव जीवन को उज्ज्वल बनाया जा सकता हैं। हमें अपनी संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करना चाहिए। दिव्या पारीक ने जीने की कला विषय पर कहा कि जीवन में हमें सकारात्मक सोच रखते हुए कार्य करना चाहिए, नकारात्मक सोच मानव को पीछे की ओर धकेल देती है। कार्यक्रम का संयोजन तथा आभार ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया।

चिंतन, कल्पना और सोच का दायरा बढ़ाती हैं किताबें

सेमिनार के अंतिम दिवस पर अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि प्रभावशाली व्यक्तित्व के लिए विद्यार्थियों को लक्ष्य बनाने की जरूरत है। कठिन मेहनत से 95 प्रतिशत सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कहा कि ईश्वर में आस्था रखने के साथ जीवन की दिशा, विचार और दृष्टिकोण तय करने के लिए किताबें पढनी चाहिए और अध्ययन में अधिकतम समय व्यतीत करना चाहिए। किताबें मार्गदर्शक होती हैं। किताबें चिंतन, कल्पना और सोच का दायरा बढ़ाती हैं और आत्मविश्वास तथा आत्मबल प्रदान करती हैं। प्रो. जैन ने सफलता के लिए पांच शब्द बताए- साध्य, साधन, साधना, साधक, सिद्धि। कार्यक्रम में अभिलाषा स्वामी ने महिला सशक्तीकरण पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन तथा आभार ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया।

स्वच्छता पखवाड़े के तहत

'मेरा विश्वविद्यालय- स्वच्छ विश्वविद्यालय' कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत 'मेरा विश्वविद्यालय-स्वच्छ विश्वविद्यालय' कार्यक्रम का आयोजन 24 सितम्बर को किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल जैन ने 'आलोचनात्मक खोज विधि- एक चिंतन' विषय पर छात्राओं को बारीकी से घर, विश्वविद्यालय, रोड व अन्य स्थानों के कचरे का विभाजन करने पर बल दिया। प्रो. जैन ने प्रेरित करते हुए कहा कि प्रत्येक छात्रा को प्रतिदिन एक घंटा तथा सप्ताह में न्यूनतम एक दिन अपने घरों, गली मोहल्लों में स्वच्छता अभियान चलाना चाहिए और लोगों को जागरूक करना चाहिए कि वे सार्वजनिक स्थलों में कूडा व गंदगी न फैलाएं। इस अवसर पर कार्यक्रम के स्थान पर मौजूद कचरे की आलोचना छात्राओं से करवाई गई। छात्राओं से स्वच्छता संबंधित प्रश्न पूछे गए, जिनके जवाब छात्रा ललिता बिडियासर, साक्षी, भूमिका जांगिड़, सीमा, सुमन मीणा, कमला डांवर, संगीता डागर, मंजू आदि ने सफलता पूर्वक दिए। कार्यक्रम में छात्राओं ने भी अपने विचार रखे। छात्राओं ने बताया कि अव्यवस्था के कारण अस्वच्छता को बढ़ावा मिलता है। इससे पूर्व कार्यक्रम के संयोजक डॉ. विष्णु कुमार ने युवाओं को देश का भविष्य बताते हुए 'मेरा विश्वविद्यालय-स्वच्छ विश्वविद्यालय' कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गांधी दर्शन सार्वभौमिक है और सबसे प्रासंगिक है उनका अहिंसा दर्शन- प्रो. शर्मा

गांधीजी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता पर दो दिवसीय सेमिनार आयोजित

संस्थान में शिक्षा विभाग एवं एनएसएस के संयुक्त तत्वावधान में दो दिनो से चल रहे 'गांधीजी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता' विषयक सेमिनार में 1 अक्टूबर को श्यामलाल स्नातकोत्तर महाविघालय शिकारपुर बुलन्दशहर यूपी के प्राचार्य प्रो. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि सांप्रदायिक कट्टरता और आतंकवाद के इस दौर में गांधीवाद तब और प्रासंगिक हो जाता है, जब सांप्रदायिक सद्भावना बनाये रखने के लिए गांधीजी के सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखने के भाव सामने आते हैं। गांधीवाद अहिंसा और सत्याग्रह पर टिका है, जो चार उपसिद्धांतों सत्य, प्रेम, अनुशासन एवं न्याय पर आधारित है, जिनकी उपादेयता एवं प्रासंगिकता, वैश्वीकरण के वर्तमान हिंसक दौर में और बढ जाती है। वर्तमान हालात में गांधीवादी मूल्य एक प्रभावी विकल्प के रूप में दिखाई देते हैं। यह परिवर्तन, न्याय और सभी की भलाई के लिए एक शक्ति है। गांधी दर्शन की प्रासंगिकता सार्वभौमिक है, परन्तु वर्तमान में सबसे ज्यादा प्रासंगिकता अहिंसा दर्शन की है। वैश्विक जगत में बढती हिंसा, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी और कटुता चिंताजनक है। ऐसे में सत्य, अहिंसा, समानता, शांति व मानवीय मूल्यों को महत्त्व देने वाला महात्मा गांधी का दर्शन ज्यादा प्रासंगिक है। गांधी दर्शन दुनिया को शांति-सौहार्द की राह पर ले जाने में मददगार बन सकेगा। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गांधीजी ने दुनिया को अहिंसा के नए रूप से परिचित करवाया और इसे जीने का एक मार्ग भी बताया। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. विष्णु कुमार ने किया। दो दिनों के इस ई-सेमीनार में 270 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इससे पूर्व प्रथम दिवस जे.आर. आर. संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर के निवर्तमान डीन और विभागाध्यक्ष प्रो. गोपीनाथ शर्मा और अपेक्स विश्वविद्यालय जयपुर के शिक्षा विभाग के डीन प्रो. अशोक कुमार सिडाना ने गांधीजी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये थे।

गांधी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता पर सेमिनार आयोजित

घोर राष्ट्रवादी थे गांधी, पर उनका राष्ट्रवाद अनन्य और समावेशी था- प्रो. गोपीनाथ शर्मा

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 30 सितम्बर को 'गांधीजी और वैश्विक समसामयिक प्रासंगिकता' पर ई-सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें जे.आर.आर. संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के निवर्तमान डीन और विभागाध्यक्ष प्रो. गोपीनाथ शर्मा ने विचार प्रकट करते हुए कहा कि गांधी के लिए आध्यात्मिकता, नैतिकता, राजनीति और अर्थशास्त्र अविभाज्य थे। उनकी दृष्टि में राजनीति से धर्म का बनावटी बंटवारा समस्या पैदा करता है। वे मानते थे कि धर्म को कर्मकांड से नहीं, बल्कि इसे नैतिकता, प्रेम और सेवा, कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावनाओं से ही समझा जा सकता है। गांधी घोर राष्ट्रवादी थे, लेकिन उनका राष्ट्रवाद अनन्य और समावेशी दोनों था। उनका राष्ट्रवाद किसी अन्य राष्ट्रवाद के प्रति विरोधपूर्ण नहीं था। हमें उनके विचारों की रोशनी की फिर से आवश्यकता है, जब हम आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भरता की खोज कर रहे हैं। गांधीजी के लिए स्वदेशी की जड़ अहिंसा, प्रेम और निःस्वार्थ सेवा में थी। वे अपने जीवन में भगवद्गीता के संदेशों से गहरे प्रभावित थे। अनासक्ति का सबक उन्होंने गीता के पाठ से ही ग्रहण किया था।

वैश्विक स्तर पर अहिंसा के सिद्धांत का पालन जरूरी

अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर के शिक्षा विभाग के डीन प्रो. अशोक कुमार सिडाना ने कहा कि गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। गांधीजी के विचारों का मूल लक्ष्य सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है। गांधी व्यक्तिगत जीवन से लेकर वैश्विक स्तर पर अहिंसा के सिद्धांत का पालन करने पर बल देते थे। आज संपूर्ण विश्व अपनी समस्याओं का हल हिंसा के माध्यम से ढूंढना चाहता है। अहिंसा जैसे सिद्धांतों का पालन करते हुए विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है, जिसकी पूरे विश्व को आवश्यकता है। संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि गांधी की मूल सीख सत्य और अहिंसा थी। सत्य और अहिंसा के उनके दर्शनों को समझे बिना कोई भी गांधी को नहीं समझ सकता है। यह विचार भारतीय चिंतन और दर्शन से अनुप्राणित है। इन्हें भली-भांति समझने और उन्हें प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है। सेमीनार में 220 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन डॉ. विष्णु कुमार ने किया।

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में त्रिगुण प्रकृति पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 15 दिसम्बर को 'संकाय संवर्धन कार्यक्रम' के अंतर्गत 'प्रकृति त्रिगुणात्मक है' विषय पर डॉ. अमिता जैन ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हिंदू शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कुछ गुण होते हैं। ये व्यक्ति की प्रकृति निर्धारित करते हैं। सतोगुण वाला व्यक्ति धार्मिक प्रकृति का होता है, सज्जन, दयालु होता है। रजोगुण वाला व्यक्ति आर्थिक क्रिया-कलाप करने वाला, समाज की रक्षा करने वाला होता है। तमोगुण वाला व्यक्ति नीच कर्म में लिप्त होता है, गंदे कार्य करता है, जीवनशैली निम्न कोटि की होती है। सारा संसार पांच तत्वों से बना है और इन पांच तत्वों के तीन गुण हैं- त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण। यही तीन गुण हमारी चेतना की तीन अवस्थाओं- जागृत अवस्था, सुप्तावस्था, स्वप्नावस्था से भी संबंधित है। जब सतोगुण की प्रधानता होती है तो हम प्रफुल्लित, हल्के-फुलके, अधिक सजग व बोधपूर्ण होते हैं। रजोगुण की प्रधानता में उत्तेजना, विचार, इच्छाएं और वासनाएं बहुत बढ़ जाती हैं। हम या तो बहुत खुश या बहुत उदास हो जाते हैं। तमोगुण की प्रधानता होती है तो हम सुस्त, आलस्य और भ्रम के शिकार हो जाते हैं। हमारे कृत्यों में भी इन्हीं तीन गुणों की झलक देखने को मिलती है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष तथा कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि आत्मा के ये तीन गुण व्यक्तित्व निर्माण में अलग-अलग भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। जिन व्यक्तियों में सतोगुण की प्रधानता होती है, वे देवता, जिनमें रजोगुण प्रधान होता है वे मानव और जिनमें तमोगुण प्रधान होता है वे राक्षसी प्रवृत्ति के होते हैं। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

छात्राध्यापिकाओं के दल ने जाना आचार्य महाप्रज्ञ का सम्पूर्ण जीवनवृत्त

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 5 अगस्त को छात्राध्यापिकाओं के एक दल ने शैक्षणिक भ्रमण के लिए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के नेतृत्व में सालासर, सरदारशहर स्थित महाप्रज्ञ आर्ट गैलरी व पीठ का बालाजी आदि प्रसिद्ध धर्मस्थलों का भ्रमण करके महत्त्वपूर्ण जानकारियां हासिल की। सरदारशहर के आचार्य महाप्रज्ञ दर्शन आर्ट गैलरी में दो ऑडिटोरियम में भ्रमण किया गया। इसमें छात्राध्यापिकाओं ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवन के सम्पूर्ण वृत्तांत के बचपन से लेकर समाधि तक के इलेक्ट्रोनिक मॉडल्स का अवलोकन किया और उनके जीवन की जानकारी प्राप्त की। छात्राओं ने लघु वृत्तचित्र भी इस सम्बंध में देखा। यह सब वहां के प्रभारी गाइड बजरंग सैन ने सभी को पूरी जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर छात्राओं ने अपनी जिज्ञासाएं भी व्यक्त की, जिनका समाधान प्रो. जैन व अन्य प्राध्यापकों ने किया। छात्राओं ने सालासर बालाजी धाम व पीठ का बालाजी धाम का भ्रमण करके इन महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थलों की जानकारी प्राप्त की तथा दोनों स्थानों का इतिहास, महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं धार्मिक आस्थाओं की जानकारी प्राप्त की। इस भ्रमण दल में 60 छात्राध्यापिकाओं के अलावा प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. गिरिराज भोजक आदि भी साथ थे।

राज्य सरकार के 4 साल पूर्ण होने पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

राज्य सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर राजस्थान सरकार के आदेशानुसार यहां संस्थान के शिक्षा विभाग में मॉडल स्टेट की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से संबंधित विषयों पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आयोजित किये जा रहे इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में योजनाओं से संबंधित 50 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की बनायी गई प्रश्नावली, के माध्यम से हुई प्रश्नोतरी प्रतियोगिता में कुल 90 छात्राओं ने भाग लिया। इस सम्बंध में लिखित परीक्षा का आयोजन भी किया गया, जिसमें राजस्थान सरकार की सभी योजनाओं को शामिल करते हुए 30 अति लघुत्तरात्मक प्रश्नों का चुनाव किया गया और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस लिखित प्रतियोगिता में कुल 100 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं का संयोजन डॉ. अमिता जैन एवं प्रमोद ओला ने किया।

जीवन में नकारात्मकता नहीं आने दें एवं शालीन बने रहें- कुलपति प्रो. दूगड़

शुभ भावना कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित 14 सितम्बर को शुभभावना समारोह की अध्यक्षता करते हुए अपने सम्बोधन में छात्राओं के लिए उनके भावी जीवन में सफलता प्राप्ति सम्बंधी विभिन्न सूत्र बताए तथा कहा कि नैतिकता व चरित्र-निर्माण जहां इस संस्थान का ध्येय है, वहीं इसे जीवन भर अपनाए जाने और जन-जन तक इसका संदेश पहुंचाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि गुरूजनों से प्राप्त ज्ञान को आत्मसात् करके उसे भावी पीढ़ी में संचारित करें, तकनीकी के वैकल्पिक साधनों का ज्ञानप्राप्ति तथा ज्ञान के प्रसार में निरंतर उपयोग करें। कभी भी नकारात्मकता अपने जीवन में नहीं आने दें तथा कृष्ण की भांति विनम्र, क्षमावान तथा शालीन बनने का प्रयास करें। उन्होंने हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं के साथ छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं दीं।

यह शुभ भावना कार्यक्रम संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत बी.एड. के चतुर्थ सेमेस्टर तथा बी.एस.सी.-बी.एड एवं बी.ए.-बी.एड. अष्टम सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने शुभभावनाएं देते हुए कहा कि जीवन में सफलता हेतु सर्वप्रथम लक्ष्य निर्धारित करें और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध एवं कठोर परिश्रम करें तो सफलता मिलना सुनिश्चित है। कार्यक्रम का प्रारम्भ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण से किया गया। इस अवसर पर अतिथियों के स्वागत के लिए संगान किया गया। छात्रा मोनिका जोशी ने गणेश-वन्दना प्रस्तुत की। छात्रा प्रीति राजपुरोहित ने अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी थे। अंत में डॉ. आभा सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन स्मृति एवं साक्षी ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 20 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष तथा कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर बताया कि एकता संगठन का प्रतीक होती है। एकजुटता के साथ हम किसी कार्य को किए जाने पर वह कार्य सरलता से संभव हो पाता है। हमें अपने विचारों में एकता रखनी चाहिए और परस्पर विरोधाभास को एकता के जरिए तोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि रंगभेद, छोटा-बड़ा, ग्रामीण-शहरी, जातिवाद आदि की भावना को मिटाने से ही एकता संभव है। एकता दिवस सहयोग, सामंजस्य, सौहार्द्र आदि की भावना को बढ़ाता है। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन एवं प्रमोद ओला ने किया। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गुरू पूर्णिमा पर छात्राओं ने किया शिक्षकों का सम्मान

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत गुरुपूर्णिमा पर्व पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि अच्छा गुरु शिष्यों के दोषों, उनकी कमजोरियों का निवारण करने हेतु निरंतर प्रयत्नशील होता है। डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने गुरु पूर्णिमा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डाला तथा भारतीय सनातन संस्कृति में आदर्श गुरु-शिष्य परम्परा के महत्त्व को बताया। डॉ. अमिता जैन तथा डॉ. विष्णु कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं ने अपने शिक्षकों का सम्मान किया। छात्राध्यापिकाओं में हर्षिता पारीक, साक्षी शर्मा, शिवानी पूनियां, ललिता बिडियासर, अभिलाषा तथा सना ने गुरु महिमा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरू अपने अनुभवों से हमें जीवन में निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होने हेतु प्रेरित करते हैं तथा सफल जीवन जीने की कला सिखाते हैं। अंत में डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन दिव्या तथा सपना द्वारा किया गया।

शिक्षण की प्रोजेक्ट मैथड व ह्यूरिस्टिक विधि पर सात दिवसीय एक्सचेंज कार्यक्रम

जीवन के व्यावहारिक ज्ञान और समस्या-समाधन में सहायक होता है सामाजिक वातावरण- नूतन चौहान

संस्थान के शिक्षा विभाग में एक सप्ताह का एक्सचेंज प्रोग्राम श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई, केशव विद्धयापीठ जामडोली जयपुर एवं जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं के शिक्षा विभाग के साथ हुए एक सप्ताह के एमओयू के अनुसार 25-30 जुलाई को आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रोजेक्ट मैथड के बारे में प्रवक्ता नूतन चौहान ने बताया कि कक्षा-कक्ष के बाहर और जीवन का वास्तविक ज्ञान देने के लिए विद्यालयों में प्रोजेक्ट मैथड का प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रोजेक्ट मैथड के जनक क्लिपैट्रिक है, जिन्होंने इस योजना को सोद्देश्यपूर्ण कार्य करने की प्रक्रिया माना, जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण तत्परता से सम्पन्न किया जाता है। यह योजना वास्तविक जीवन का एक छोटा सा अंश है, जिसे विद्यालय में संपादित किया जाता है। यह बालक को जीवन के व्यावहारिक विषयों का ज्ञान कराने में, समस्या का समाधन करने में उत्पादन-रचनात्मक कार्य कराने, कलात्मक-उपभोक्ता सिखाना, कौशलात्मक-अभ्यासात्मक विकास कराने, व्यक्तिगत भिन्नता से सीखने, विचार मंथन-तर्क, चिन्तन व निर्णय का विकास तथा प्रजातांत्रिक विकास कराने में उपयोगी है। वर्तमान समस्याओं का समाधान भी इस विधि में आसानी से किया जा सकता है। नूतन चौहान ने बताया कि प्रोजेक्ट मैथड में कार्य कराने पर परिस्थितियों का निर्माण, प्रयोजना का चयन, प्रायोजना की रूपरेखा बनाना, उत्तरदायित्व का विभाजन करना, प्रयोजना का क्रियान्वयन करना, प्रायोजना का मूल्यांकन करना, प्रायोजना का लेखा-जोखा रखना, अभिलेख संधारण करना- इन चरणों को अपनाया जाना जरूरी है।

परीक्षण के माध्यम से स्वयं सीखने दें बालक को

श्रीअग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय सी.टी.ई केशव विद्यापीठ जामडोली जयपुर के डॉ. नरेंद्र शंकर शर्मा ने ह्यूरिस्टिक विधि का परिचय देते हुए कहा कि ह्यूरिस्टिक विधि के प्रवर्तक आर्मस्ट्रांग का विश्वास था कि छात्रा को स्वयं सत्य को खोज के लिए प्रेरित किया जाए। वह इसमें विशेष आनंद का अनुभव करता है। इस कारण अध्यापक का कर्तव्य है कि छात्र को अपनी ओर से कम से कम बताएं और छात्र को अधिक से अधिक खोज कर ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दें। बालक को ऐसी परिस्थितियों में रखा जाए कि वह प्रत्येक तत्व के सिद्धांत चिंतन तथा परीक्षण के माध्यम से समझ सके। अध्यापक बालक को अवसर देने के लिए उसके कार्य में कम से कम हस्तक्षेप करें। विधि के उद्देश्य है- बालक में वैज्ञानिक भावना का विकास करना, तथ्य, सिद्धांत, नियमों की शिक्षा देना, देखने की, खोजने की तथा विचारों को व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने अतिथियों का परिचय करवाया।

प्रयोग के माध्यम से सीखना आनन्ददायी होता है- डॉ. चौहान

एक्सचेंज प्रोग्राम में चतुर्थ दिवस जयपुर के जामडोली स्थित केशव विद्यापीठ में सी.टी.ई के श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय की डॉ. श्रद्धासिंह चौहान ने विभिन्न विषयों से सम्बंधित प्रयोगशालाओं में होने वाले कार्यों एवं कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के बारे में बताया तथा उनका समाधान भी प्रस्तुत किया। उन्होंने भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, मनोविज्ञान, भूगोल, रसायन विज्ञान, गृह विज्ञान, भाषा प्रयोगशाला आदि के उपयोग तथा उपकरणों, यंत्रों, पदार्थ आदि के प्रयोग के अनुभव व कठियाइयां शेयर करते हुए प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष ज्ञान के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि प्रयोग के माध्यम से करके तथा निरीक्षण द्वारा भी सीखना होता है। यह विधि वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास, सहयोगात्मक सहभागिता का विकास, नवाचारों का विकास, खोजी प्रवृत्ति का विकास, समस्या का समाधान करना, सक्रिय व सजगता पैदा करना, प्रत्यक्ष मानसिक क्रिया आदि में काफी उपयोगी है। विचार-विमर्श, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर विधि आदि सहायक के रूप में प्रयोग की जाती है। विषयवस्तु पढने की अपेक्षा प्रयोग पर बल, संकल्पनाओं को प्रयोग के माध्यम से स्पष्ट करना, खुद करके करने से आनन्द की प्राप्ति होती है। नए ज्ञान की प्राप्ति हेतु पूर्व ज्ञान से नवीन ज्ञान प्राप्त करता है। इस विधि से सीखा हुआ ज्ञान दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाला ज्ञान होता है। उपकरणों का जितना प्रयोग होगा, ज्ञान उतना स्थायी होगा। जड़ता के नियम आदि को इस विधि से समझाया जा सकता है। प्रयोगशाला विधि के चरण हैं— समस्या को समझना, समस्या का विश्लेषण करना, उपकरणों की सूची बनाना, प्रमाणों का संकलन करना, परिणामों की व्याख्या करना, निष्कर्ष निकालना आदि। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने प्रारम्भ में बताया कि नवीन सिद्धांतों एवं नये नियमों का प्रतिपादन प्रयोगशाला विधि के माध्यम से किया जा सकता है।

सामाजिक समस्याओं का हल समस्या समाधान विधि से संभव

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय के डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने कहा कि समस्या समाधान विधि में विद्यार्थियों के मन में समस्या की जानकारी विकसित की जाती है एवं गंभीरतापूर्वक सोचकर एक युक्ति संगत हल निकालते हैं। इस विधि में विद्यार्थी समस्या का स्वतः हल सीखते हैं, निरीक्षण व तर्क शक्ति का विकास करते है, सामान्यीकरण करने में समर्थ होते है, लर्निंग बाई डूइंग से कार्य करते है, चिंतन कराने की सही प्रक्रिया का ज्ञान कराया जाता है। परिस्थिति का निर्माण, समस्या को परिभाषित करना, तथ्यों का संकलन, परिकल्पना का निर्माण, परिकल्पना की जांच, निष्कर्ष एवं सामान्यीकरण इन सोपानों के माध्यम से किसी भी समस्या का हल विद्यार्थी खोज सकते है। प्रारम्भ में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि विद्यालय, परिवार और समाज की समस्याओं के समाधान में इस विधि का अनुप्रयोग करने से समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

गणित को रोचक बनाने के लिए आगमन विधि अपनाई जानी जरूरी- डॉ. सिंहवाल

पंचम दिवस श्रीअग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर के डॉ. भावेश कुमार सिंहवाल ने कहा कि आगमन विधि में बालक स्वयं करके नियम या सिद्धांत की स्थापना करता है। उदाहरणों के आधार पर एक सामान्य नियम की स्थापना की जाती है। अनिश्चित से निश्चित, अनुभव से तर्क, विश्लेषण से संश्लेषण, विशिष्ट से सामान्य, स्थूल से सूक्ष्म, पूर्ण से अंश, प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष, प्रकृति का अनुकरण, मनोवैज्ञानिक से क्रमबद्धता की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर इस विधि में अनुसरण किया जाता है। रटंत प्रवृति को कम करना, ज्ञान का अधिक स्थायीकरण, छोटी कक्षा में अधिक उपयोगी, छात्र अधिक सक्रिय और छात्रों में अधिक रूचि का विकास किया जाता है। मनोवैज्ञानिक विधि, आत्मविश्वास की भावना का विकास और क्रमबद्धता से समस्या का हल खोजने का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इस विधि में गणित विषय का अध्ययन बहुत सटीक ढंग से किया जाता है। आगमन विधि के सोपान- उदाहरण, निरीक्षण, नियमीकरण, सत्यापन का प्रयोग किया जाता है। आगमन विधि के विपरीत निगमन विधि है। इस विधि द्वारा शिक्षण में सबसे पहले परिभाषा या नियम सिखाया जाता है, उसके बाद अर्थ स्पष्ट किया जाता है और अंत में तथ्यों के प्रयोग से पूर्णतः स्पष्ट किया जाता है। सभी विषय को आगमन विधि से नहीं पढ़ाया जा सकता है। बड़ी कक्षाओं में इस विधि का उपयोग किया जाता है। निगमन विधि के पद- परिभाषा या नियम या सूत्र, उदाहरण या प्रयोग, निष्कर्ष, सत्यापन है।

सिखाने की विधियों में प्रदर्शन विधि पर व्याख्यान

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर के डॉ. रेणु शर्मा ने एक्सचेंज प्रोग्राम के छठे दिन कहा कि सिखाने की शैली में प्रदर्शन विधि में शिक्षक कुछ प्रयोगों, उपकरणों एवं उनकी कार्यविधि का प्रदर्शन करता है।

शिक्षक पाठ्य विषय को पढाने के साथ-साथ सम्बन्धित विषय में स्वयं प्रयोग करके दिखाता है। विषयवस्तु को इस विधि में छात्र सुनता है एवं देखता है। विज्ञान विषय के अध्यापन में यह विधि महत्त्वपूर्ण है। छात्रा एवं शिक्षक दोनों सक्रिय, अवलोकन क्षमता में वृद्धि, छात्र को बोरियत नहीं होती, छात्रों में उत्साह, प्रसन्नता एवं आनन्द की अनुभूति, दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रदर्शन, पाठ के प्रति जिज्ञासा, अनुशासन की भावना का पालन, प्रत्यक्ष अवलोकन से सीखना, चित्र, चार्ट एवं वस्तुओं को प्रदर्शित करके सीखना, प्रत्यक्ष अनुभव से सीखना, ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञानार्जन, कक्षा शिक्षण में शिक्षण सामग्री का अनुप्रयोग, विविध उपकरणों का प्रयोग, विज्ञान एवं भूगोल में प्रत्यक्ष ज्ञान कराने में सक्षम, यथार्थता सिद्ध करने में उपयोग, यंत्र काम में लाने का कौशल, वैज्ञानिक तथ्यों की यथार्थता का अनुभव, वैज्ञानिक घटना को दृश्य के रूप में प्रस्तुतीकरण, प्रयोग प्रदर्शन, स्पष्ट एवं स्थाई ज्ञान, क्रियात्मक प्रयोगों को आसानी से समझाना आदि कथन इस विधि में प्रयुक्त होते हैं।

वनस्पति विज्ञान से सम्बंधित विभिन्न मॉडल बना कर किया प्रदर्शन

संस्थान के शिक्षा विभाग तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के निर्देशन में संस्थान के बोटनी लैब में वनस्पति विज्ञान के निर्मित विभिन्न मॉडल्स की प्रदर्शनी का आयोजन 17 अक्टूबर को किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी तथा शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन द्वारा किया गया। बाद में उन्होंने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने उन्हें बताया कि प्रदर्शित सभी मॉडल्स का चयन स्वयं विद्यार्थियों द्वारा किया गया है, जो इनके पाठ्यचर्या का अंग है। हमारा प्रयास रहता है कि विद्यार्थियों की क्षमताओं का तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का यथासंभव विकास हो पाएं। अवलोकन के उपरांत प्रो. त्रिपाठी ने विद्यार्थियों के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि बहुत ही रचनात्मक कार्य किया गया है। इससे विज्ञान के विद्यार्थियों की क्षमताओं का विकास होता है। प्रो. जैन ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता की प्रशंसा करते हुए उन्हें निरंतर नवाचार करने हेतु प्रोत्साहित किया तथा कहा कि अन्य विद्यार्थियों को भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

इन मॉडल्स का किया गया प्रदर्शन

प्रदर्शित मॉडलों में खुशी जोधा ने पुनर्संयोजी डीएनए तकनीक, उर्मिला तथा प्रियंका ने वानस्पतिक उद्यान, सना ने प्रकाश संश्लेषण, सलोनी, पूर्वी व अभिलाषा ने बूंद-बूंद सिचाई मोडल, मंजू तथा मोनिका ने पौधों में पानी का स्थानांतरण, शिवानी तथा प्रेम ने पत्तियों के शीर्ष के प्रकार, आशना ने मृदा-परिच्छेदिका मॉडल, सपना व तनियां तथा दिव्या ने वाष्पोत्सर्जन मोडल, नेहा तथा लिछमा ने डीएनए पुनरावृति मॉडल, निर्मला तथा पूजा ने परागण मोडल, दीपिका, सुमित्र व उषा ने द्विबीजपत्री जड़, कंचन तथा शोभा ने स्टोमेटा की संरचना, संतोष, किरण व विन्दु ने द्विबीजपत्री पर्ण, विमला, पालू व विजयलक्ष्मी ने एक बीजपत्री पर्ण, मनीषा, हर्षिता तथा सुरमा ने एक बीजपत्री स्तम्भ, मेघा ने ग्लाइकोलाइसिस, हेमलता तथा इशिका बरवासा ने हाइड्रोपोनिक्स तथा कमला व् ज्योति ने पर्ण फलक की आकृति के मॉडल का निर्माण कर प्रदर्शित किए। इस अवसर पर प्रदर्शनी के अवलोकनार्थ डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. भावाग्रही प्रधान, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, प्रमोद ओला, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, प्रेयस सोनी, तनिष्का एवं विभिन्न विद्यार्थियों द्वारा किया गया। सभी ने विद्यार्थियों के कार्य को सराहा और उनका उत्साहवर्धन किया।

आचार्य श्री महाश्रमण रचित 'रश्मियां अर्हत वाङ्मय की' कृति की समीक्षा

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने आचार्यश्री महाश्रमण रचित 'रश्मियां आर्हत वाङ्मय की' पुस्तक को व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति में सहायक पुस्तक बताया। वे यहां संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्धन व्याख्यानमाला के अंतर्गत 13 अक्टूबर को पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में इस कृति की समालोचना प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 'रश्मियां अर्हत वांङ्मय की' कृति में आचार्यश्री ने सुखी, सफल तथा संतुलित जीवन एवं शैक्षिक व लोकतान्त्रिक विषयों को सहज एवं सरल उदाहरणों व प्रसंगों के माध्यम से वर्णित किया हैं। उन्होंने पुस्तक में आत्मा तथा शरीर दोनों के योग जीवन को वर्णित किया है तथा विशिष्ट जीवन शैली के चार सूत्र बताये हैं- ईमानदारी के प्रति निष्ठा, संवेग संतुलन, संयम तथा समय नियोजन। आचार्यश्री ने पुस्तक में वर्तमान जीवन को अच्छा बनाने के तीन सूत्र बताए हैं- स्वास्थ्य सम्पन्नता, शक्ति सम्पन्नता तथा शांति सम्पन्नता। उन्होंने बताया है कि शांति भौतिक पदार्थों से नहीं अपितु त्याग व संयम से होती है। व्यक्ति को स्वयं को उपयोगी बनाना चाहिए, जिसके लिए योग्यता का विकास जरुरी है। आचार्यश्री ने व्यक्ति में वाक्कौशल का होना आवश्यक बताते हुए भाषा को अलंकृत व परिष्कृत बनाने के लिए चार बातें आवश्यक बतायी है- परिमितभाषिता, मधुरभाषिता, यथार्थभाषिता तथा परीक्ष्यभाषिता। जिस व्यक्ति के जीवन में नम्रता, क्षमा, समर्पण तथा सबके प्रति आदर का भाव है, वह व्यक्ति महान होता है।

शिक्षा की महत्ता बताते हुए आचार्यश्री महाश्रमण अपनी इस कृति में कहते हैं कि शिक्षा व्यक्ति निर्माण का सशक्त माध्यम है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति के संस्कार स्तर को बहुत ऊंचा उठाया जा सकता है। आचारयुक्त ज्ञान का विकास विद्यार्थी को योग्य बना सकता है। विद्यार्थी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा, विनम्रता का भाव तथा नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प जग जाये तो वह अच्छा नागरिक बन सकता है। वृद्धावस्था को शांतिपूर्वक जीने हेतु आचार्यश्री ने चार उपाय सुझाये हैं- जप, तप, उपशम तथा श्रम। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए कहते हैं- देशहित तथा व्यक्ति हित के लिए लोकतंत्र स्वस्थ हो, अनेकांत व अहिंसा पर आधारित हो, सहयोगपरक दृष्टिकोण हो तो लोकतंत्र देश के लिए वरदायी बन सकता है। अंत में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने आभार ज्ञापित करते हुए कहा आचार्यश्री की प्रस्तुत कृति में वर्णित विचार पूर्ण रूपेण अनुकरणीय हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति का जीवन सुखी, सफल तथा उत्कृष्ट बन सकता है तथा राष्ट्र निर्माण में वह अपनी भागीदारी निभा सकता है। कार्यक्रम में समस्त शिक्षा संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आचार्य महाश्रमण की पुस्तक 'संवाद भगवान से' की समीक्षा प्रस्तुत

संस्थान के शिक्षा विभाग में संचालित पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में 28 नवम्बर को आचार्य महाश्रमण की पुस्तक 'संवाद भगवान से' के भाग-दो की समीक्षा प्रस्तुत की गई। समीक्षा में प्रो. बी.एल जैन ने बताया कि आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक आदि प्रेरणादायी विषयों को इस पुस्तक में प्रश्न और उत्तर के माध्यम से गहनता से समझाने का प्रयास किया गया है। मन, वचन, काया, शांति, सद्भाव, आहार, योग, भक्ति आदि के विषय में यह पुस्तक ज्ञानेंद्रियों को पवित्र बनाने के लिए प्रेरित करती है और जीवन में आने वाली समस्याएं, चुनौती और कठिनाइयों से निजात दिलाने में सहायक है। ज्ञानेंद्रियों और त्रिरत्न से क्या मिल सकता है, इसका विवेचन करते हुए ज्ञान संपन्नता के बारे में बताया गया है कि ज्ञान से संपन्न व्यक्ति को संसार के पदार्थों का ज्ञान ठीक प्रकार से हो जाता है। ज्ञानी व्यक्ति अवधि ज्ञान, विनय, तप और चरित्र आदि विशिष्ट गुणों का खंचाजी बन जाता है। उन्होंने बताया कि आचार्यश्री ने अपनी इस पुस्तक में ज्ञान को पवित्र वस्तु माना है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है, जिसमें श्रद्धा और रुचि होती है। जिस व्यक्ति के अंदर ज्ञान प्राप्त करने के प्रति लालसा नहीं होती, वह व्यक्ति कभी ज्ञानी नहीं बन सकता है। ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति परम शांति एवं आनंद को प्राप्त करता है। ज्ञानी व्यक्ति जीवन में कभी भ्रमित नहीं होता है। वह हर कार्य श्रेष्ठ ढंग से करता है। ज्ञान का निरंतर अभ्यास करने से वस्तुओं का, परिवेश का और घटनाओं को व्यक्ति जान लेता है। आचार्य महाश्रमण कहते हैं कि सम्यक् दर्शन प्राप्त व्यक्ति वस्तु को उसी रूप में ही देखता है जिस रूप में वह होती है। चरित्र संपन्नता मैं व्यक्ति शैलेषी भाव को प्राप्त होता है और चरित्र संपन्न व्यक्ति प्रशांत, मुक्त और सब दुःखों का अंत कर लेता है। ज्ञान को प्राप्त करने के बाद उसे आचरण में लाना सम्यक चरित्र है। क्योंकि, ज्ञान का सार आचार है। चरित्र की साधना और आराधना करते हुए व्यक्ति शैलेशी भाव को प्राप्त कर लेता है।

यम्मी मिल्लेट्स कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्देशित एवं संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित कार्यक्रम 'वर्ष 2023: अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज' पर चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला में 'यम्मी मिल्लेट्स' कुकिंग प्रतियोगिता का आयोजन 15 अक्टूबर को किया गया, जिसमें 30 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में देशी व मोटे अनाज के विविध प्रकार के लजीज व्यंजन बनाए गए। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. बी .प्रधान ने कहा कि जिस प्रकार का भोजन ग्रहण किया जाता है, उसी प्रकार का हमारा मन व शरीर

बन जाता है। डॉ. आभा सिंह ने कहा कि प्राचीन विरासत और प्राचीन खान-पान की तरफ और हमारी संस्कृति की तरफ वापस लौटने का समय आ गया है। 'यम्मी मिल्लेट्स' कुकिंग प्रतियोगिता की समन्वयक डॉ. सरोज राय ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय इयर ऑफ मिलेट्स समर्थित संकल्प का उद्देश्य समाहित करने से वैश्विक जागरूकता, खाद्य सुरक्षा, पोषण, आजीविका सुरक्षित करना, किसानों की आय बढ़ाना, गरीबी उन्मूलन और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देने के दृष्टिकोण से प्रभावी है, इसलिए भोजन में इन पोषक अनाजों को शामिल करने से हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहता है।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर निबंध लेखन प्रतियोगिता में 65 छात्राओं ने भाग लिया

मॉडल स्टेट राजस्थान सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से संबंधित विषयों पर सरकार द्वारा यहां संस्थान के शिक्षा विभाग में मॉडल राज्य सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियो में रचनात्मकता में वृद्धि होती है और उन्हें प्रेरणाएं मिलती हैं। विद्यार्थियों में स्वयं के विचारों व्यक्त करने की सृजनात्मक शक्ति का प्रादुर्भावा होता है। प्रतियोगिता संयोजक डॉ. अमिता जैन ने बताया कि संस्थान के बीएड के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में 200-200 शब्दों में सरकार की तीन-तीन योजनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हुए अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इस अवसर पर प्रतियोगिता में विजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतियोगिता में कुल 55 छात्राओं ने भाग लिया।

हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में हिन्दी दिवस के अवसर पर 13 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि देश में 50 करोड़ से अधिक हिन्दीभाषी हैं। हमें हिन्दी शब्दकोश को निरन्तर बढाने और इसे समृद्ध बनाने की जरूरत है, ताकि इसे विश्वभाषा बनाया जा सके। प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कहा कि हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा बनाए जाने के लिए ठोस कदम उठाए जाने की जरूरत है। दुनिया के 195 संस्थानों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन भारत की संस्कृति को जानने के लिए करवाया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रियंका प्रजापत, गायत्री चौधरी, जैतमाल, पूजा बेड़ा, नीतेश जांगिड़, पूजा चौधरी, हर्षिता पारीक आदि ने भी अपने विचार रखे।

स्वाध्याय दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

स्वाध्याय दिवस के अवसर पर संस्थान के शिक्षा विभाग में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय हताश, निराश, परेशानी, ईर्ष्या, नकारात्मक सोच के बीजों को नष्ट करता है। पुस्तकें नई मंजिल, नए कार्य, नई दशा का बोध कराती हैं। जीवन की दशा, विचार और दृष्टिकोण तय करने में किताबें मार्गदर्शक होती है। जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ेंगे, प्रयोग करेंगे, अनुभवों से सीखेंगे, उतना ही ज्ञान बढ़ेगा तथा अज्ञान कम होगा। हमें निरंतर अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करते रहना चाहिए। पुस्तकों का स्वाध्याय ही श्रेष्ठ जीवन निर्माण में सहायक है। स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति उन्नत प्रतिमान को प्राप्त करता है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

छात्राओं ने किया कलात्मक जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण
रचनात्मक कौशल विकास कार्यक्रम में हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन

संस्थान के शिक्षा विभाग में दो दिवसीय कार्यशाला ''रचनात्मक आधारित कौशल विकास'' कार्यक्रम का आयोजन 23 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस छात्राध्यापिकाओं ने अपने हाथों से विविध प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया। छात्राओं ने अपना कौशल दिखाते हुए अपने हाथों से कलात्मक पायदान, चित्रांकन पूर्ण बैग, कढाई आधारित तकिये की खोली, कपड़े की पतंग, नेम प्लेट आदि वस्तुओं का निर्माण किया।

कार्यशाला में छात्राध्यापिकाओं ने अपने हाथों से कलात्मक, कौशलात्मक एवं उत्पादनात्मक विषय पर कार्य सम्पादित किया। उन्होंने विविध प्रकार की जीवनोपयोगी वस्तुओं में ऐश्वर्य सोनी ने पेंटिग थैला एवं तकिया, ज्योत्स्ना कंवर ने मखमल मोती बैग, अभिलाषा ने कलाकृति गुलदस्ता, दीक्षा स्वामी ने रंगोली, ज्योति फुलवारिया ने गुडिया, निकिता ने पायदान एवं मूर्ति, साक्षी ने पेंटिंग गुलदस्ता, मंजू ने हेंगिग, पूजा ने ड्राइंग, शिवानी ने झूला, सीमा ने पैन स्टेंड, सुमन ने हाथ में मेहंदी रचाना, कविता गोरा ने मटका स्टेंड आदि वस्तुओं का निर्माण किया।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने प्रेरित करते हुए कहा कि हस्त-कौशल जीवन में बहुत उपयोगी होते हैं, शिक्षा को सार्थक एवं व्यावहारिक बनाने के लिए कौशल विकास कार्यशालाओं का आयोजन उपयोगी सिद्ध होता है।

आशु भाषण प्रतियोगिता

राजस्थान सरकार के निर्देशानुसार 26 दिसम्बर तक आयोज्य मॉडल स्टेट राजस्थान सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाएं से संबंधित विषयों पर राज्य सरकार के कार्यकाल के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शिक्षा विभाग में तीसरे दिवस आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर कहा कि इन प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियो का ज्ञानवर्धन होता है। संयोजक डॉ. अमिता जैन ने कहा कि प्रतियोगिता में योजनाओं से संबंधित पर्चियां बनायी गई, फिर पर्चियों के अनुसार प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में कुल 25 छात्राओं ने भाग लिया।

कारगिल विजय दिवस मनाया

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस कार्यक्रम आयोजन किया गया। इसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन सहित शिक्षा विभाग के सभी संकाय सदस्यों एवं छात्राओं ने शहीदों को याद किया।

देशी मोटे अनाज से स्वास्थ्य व शुद्ध जीवन शैली का विकास संभव

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा घोषित वर्ष 2023 के कार्यक्रम 'अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज' के सम्बंध में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा सूरजमल भूतोडिया उच्च माध्यमिक राजकीय कन्या विद्यालय में 27 अगस्त को आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में देशी एवं पौष्टिक मोटा अनाज की विशेषताओं, गुणों एवं भोज्य-प्रयोग में उपयोगिता के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मोटे अनाज एवं स्वस्थ जीवन शैली जीने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि संतुलित आहार का जीवन शैली पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए अपनी दिनचर्या में सभी को मोटे अनाज युक्त एवं चोकर युक्त भोजन को शामिल करना चाहिए।

समन्वयक डॉ. सरोज राय ने अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स ईयर मनाए जाने के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि अंतर्राष्ट्रीय इयर ऑफ मिलेट्स समर्थित संकल्प का उद्देश्य समाहित करने से वैश्विक जागरूकता, खाद्य सुरक्षा पोषण आजीविका सुरक्षित करना, किसानों की आय बढ़ाना, गरीबी उन्मूलन और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देने के दृष्टिकोण से प्रभावी है, इसलिए भोजन में इन पोषक अनाजों को शामिल करना हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। अन्य वक्ताओं ने राजस्थान प्रांत के बतौर मोटे अनाजों बाजरा, मोठ, मूंग, ज्वार आदि के गुणों एवं उपयोगिता व महत्त्व के बारे में बताया तथा देश और वातावरण के अनुरूप हवा-पानी होने और तदनुरूप ही खानपान की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही भाषण, कविता, लघु नाटिका आदि विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। मोटे अनाज के प्रयोग के प्रति जागरूकता बढाने के लिए रैली भी निकाली गई। कार्यक्रम में भूतोड़िया स्कूल के सभी शिक्षकवर्ग एवं विद्यार्थियों के अलावा जैविभा से डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, प्रमोद ओला, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अभिलाषा स्वामी ने किया।

भिन्न-भिन्न बोलियों में गीतों, नृत्यों, खूबियों के साथ मनाया भारतीय भाषा दिवस

यूजीसी के निर्देशानुसार संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 10 दिसम्बर को भारतीय भाषा दिवस का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष एवं कुलसचिव प्रो. बीएल जैन ने आयोजना के प्रथम सत्र में कहा कि हमें भारतीय भाषाओं के महत्त्व को समझना चाहिए, जो हमारे अस्तित्व की द्योतक हैं। ये भाषाएं ही देश की विविधता में एकता का परिचय देती हैं। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन ने संस्कृत भाषा में एक गीतिका प्रस्तुत की। डॉ. सरोज राय ने भोजपुरी भाषा में एक स्तुति प्रस्तुत की। डॉ. आभा सिंह ने अपने क्षेत्र की भाषा से सभी को अवगत करवाया। डॉ. गिरिराज भोजक ने मारवाड़ी भाषा में एक गीत की प्रस्तुति दी। बी.एड. की छात्राध्यापिकाओं ने भी अपनी-अपनी भाषा में गीत, कविता आदि का प्रस्तुतीकरण करते हुए भारतीय भाषा दिवस को बखूबी मनोरंजन पूर्ण बनाया। कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में छात्रध्यापिकाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के गानों पर नृत्य की प्रस्तुति दी गयी, जिनमें मनोजा, सुनीता, पिंकी, सरिता, सुमिता, राधिका, पिंकेश, नीतू, ज्योति भोजक, पलक चौधरी और अन्य छात्राध्यापिकाओं द्वारा समूह में प्रस्तुतियां दी गई। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित शब्दावली का मोहक प्रदर्शन कार्यक्रम में किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. भाबाग्राही प्रधान ने भारत की भाषाओं एवं उद्देश्य से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

'स्वच्छता की सेवा' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता में खुशी जोधा प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन 27 सितम्बर को किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को 'स्वच्छता ही सेवा' विषय पर पोस्टर बनाने थे। प्रतियोगिता में छात्राओं ने स्वच्छता से जुड़े संदेशों व मनोभावों को चित्रकला के माध्यम से कागज पर उकेरा। प्रतियोगिता में 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें प्रथम स्थान पर खुशी जोधा रही। द्वितीय स्थान पर दीपिका कटारा और तृतीय स्थान पर पल्लू रही।

कल्पना और कला के माध्यम से बनाए पोस्टर

प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रथम रही छात्रा खुशी जोधा ने पोस्टर के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य को बरकरार रखने के लिए स्वच्छता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए दर्शाया कि मनुष्य प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा है, इसलिए प्रकति को स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य है। द्वितीय रही छात्रा दीपिका कटारा ने 'जहां रहती है सफाई, वहां होती है अच्छे मन से पढ़ाई' का संदेश देते हुए अपने पोस्टर में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए स्वच्छता को आवश्यक बताया। तृतीय रही छात्रा पल्लू ने 'स्वच्छता ही अच्छे स्वास्थ्य की चाबी है' विषय पर पोस्टर बना कर अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता की आवश्यकता को दर्शाया। इससे पूर्व प्रतियोगिता के शुभारंभ पर विभागाध्यक्ष

प्रो. बनवारीलाल जैन ने कहा कि समस्त देशवासियों का अपने देश को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में अपना विशेष सहयोग देने का कर्तव्य है। विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रमों के माध्यम से जनजागरण कर स्वच्छता के लिए देश समाज को प्रेरित किया जाना, इसके लिए आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. विष्णु कुमार ने स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह उतार कर उसे अपनी आदत बनाने की जरूरत बताई और छात्राओं को सिर्फ बाहरी स्वच्छता के साथ मन की स्वच्छता को अपनाने की सलाह दी।

मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में ड्रामा एंड आर्ट इन एजुकेशन के अंतर्गत कौशल विकास संबंधी कार्यक्रमों की श्रृंखला के बीएड में अध्ययनरत छात्राध्यापिकाओं द्वारा मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 54 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि यहां होने वाली सभी प्रतियोगिताएं छात्राध्यापिकाओं के सर्वंगीण विकास के उद्देश्य से आयोजित की जाती हैं। मेहंदी बनाना और मांडणा दोनों विधाएं कलास्वरूप हैं। मेहंदी से समायोजन, धैर्य, शारीरिक संतुलन स्थापित होता है। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कहा कि जिस प्रकार से मेहंदी का खिला रंग हमारे जीवन में एक आकर्षकता का रूप लेकर आता है, उसी प्रकार जीवन में अनुशासन की भावना भी विकसित होती है। उन्होंने मेहंदी में कई औषधीय गुणों का समावेश होना और उपयोगिता बताई।

छात्राध्यापिकाओं ने गीत व नृत्य प्रस्तुत किए

कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर 18 अगस्त को शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि श्री कृष्ण मानवी शक्ति के महामानव थे, उनके विविधताओं से भरे जीवन से सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मानव जाति के कल्याण के लिए अनुकरणीय परम्पराओं का शुभारम्भ है। जन्माष्टमी पर्व प्रभारी डॉ. सरोज राय ने बताया कि कृष्ण का जन्म मानव मूल्यों के पुनर्स्थापना के लिए हुआ था। श्री कृष्ण का जन्मोत्सव अनुकरणीय ही नहीं, चिंतनीय भी है। श्री कृष्ण का व्यक्तित्व बहुरंगी था, उनमें सर्वप्रियता भी है, सखाभाव भी है, प्रत्येक नागरिक को उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दी। मोनिका जोशी व पूर्वी तंवर ने युगल नृत्य प्रस्तुत किया। साक्षी शर्मा, शुभा भोजक, हर्षिता पारीक व अभिलाषा स्वामी ने भजन, कविता की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्रारम्भ कृष्ण आरती और माल्यार्पण से किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरोज राय ने किया।

छात्राओं ने पेपर कटिंग कर किया सजावटी सामग्री का निर्माण

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में 12 दिसम्बर को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न रंगीन पेपर्स के माध्यम से अलग अलग सामग्री निर्मित की गयी। इसमें छात्राओं ने प्रशिक्षक के निर्देशन में वेस्ट पेपर्स की कटिंग करके उससे सजावट की विभिन्न सामग्रियों का निर्माण किया। छात्राओं को पेपर कटिंग का यह प्रशिक्षण पाली के मेवाराम व महेन्द्र ने प्रदान किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि ये सामग्री छात्राओं के रोजगार से संबंधित होने के कारण जीवनोपयोगी भी है। ये छात्राओं में कौशल विकास करने में सहायक तकनीक है। अंत में डॉ. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला में 150 छात्राओं ने भाग लिया।

सादगी, आचार-विचार, व्यवहार होते हैं व्यक्तित्व विकास के मुख्य घटक

व्यक्तित्व विकास पर सात दिवसीय वेबिनार का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्त्वावधान में कुलपति प्रो. बीआर दूगड़ के निर्देशन में आयोजित सात दिवसीय (11-16 जुलाई) व्यक्तित्व विकास वेबिनार के प्रथम दिवस एपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर के कुलपति प्रो. ओपी छंगाणी ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि व्यक्तित्व निर्माण के घटकों में व्यक्ति की सादगी, उसके आचार-विचार, व्यवहार तथा उसका अपने प्रति, परिवार के साथ व समाज के साथ सामंजस्य भी शामिल हैं। इन घटकों पर व्यक्ति का ध्यान केन्द्रित होना जरूरी है। उन्होंने व्यक्तित्व विकास के निर्धारक तत्त्वों, व्यक्तित्व विकास की अपेक्षाएं आदि पर विस्तार से बोलते हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के 16 मापदंडों के बारे में बताया तथा कहा कि हर विद्यार्थी को गूगल पर जाकर अपने व्यक्तित्व का मूल्यांकन इन मापदंडों के आधार पर करना चाहिए और अपने आप में सुधार लाना चाहिए। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत कर स्वागत किया तथा व्यक्तित्व विकास के सूत्रों को हृदयंगम करने और जीवन में बदलाव लाने को महत्त्वपूर्ण बताया। अंत में सहायक आचार्य डॉ. बलवीरसिंह चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

व्यवहार कुशलता से हर चुनौती का सामना संभव- प्रो. परमार

व्यक्तित्व विकास व्याख्यान माला शिविर के दूसरे दिन 12 जुलाई को संगोष्ठी की मुख्य वक्ता अरविंद यूनिवर्सिटी जयपुर के विधि संकाय की डीन प्रोफेसर आराधना परमार ने बताया कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में यदि व्यक्ति व्यवहार में कुशल और आचरण में सजग है, तो वह अपनी व्यवहार कुशलता से अपने जीवन की हर चुनौती का सामना कर लेगा। पर्सनैलिटी डेवलपमेंट के हुनर की पूर्णता हेतु प्रो. परमार ने नैतिक संस्कारों को आत्मसात् करने एवं नैतिकता को जीवन में सर्वोपरि रखने हेतु विभिन्न प्रेरक प्रसंगों के उदाहरण देते हुए जीवन में कर्तव्यों की पालना एवं कर्तव्यनिष्ठ जीवन के आनंद का अनुभव करने हेतु प्रेरित किया। प्रो. परमार ने विशेष रूप से विद्यार्थी – जीवन को धार्मिक ग्रंथों से सीखने, अपने माता-पिता और गुरु का सम्मान करने, समय-समय पर आत्म विश्लेषण करने तथा अपने जीवन में किसी ना किसी एक को जीवन प्रेरक एवं आदर्श के रूप में चुनने हेतु प्रोत्साहित किया। साथ ही व्यक्तित्व एवं चरित्र को निखारने के लिए आपसी संबंधों में आत्मीयता पर जोर दिया। प्रारम्भ में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता प्रो. आराधना परमार का स्वागत सम्मान करते हुए उनका परिचय कराया। अंत में हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया। संचालन वाणिज्य संकाय सदस्या प्रगति चौरड़िया ने किया।

समय का दुरूपयोग टाल कर सही मैनेजमेंट करें

तृतीय दिवस के व्याख्यान में 13 जुलाई को मुख्य वक्ता भारतीय पुलिस सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी व प्रसिद्ध साहित्यकार हरिराम मीणा ने बॉडी लेंग्वेज, शब्दों का चयन, विषय का भाव, कथन की स्पष्टता आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए सफलता के सूत्र बताए। उन्होंने टाईम-मैनेजमेंट को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि समय का दुरुपयोग टाल देना चाहिए। वक्त आपका है, उसको मैनेज करें। सबके सामने बहुत सारे काम रहते हैं, लेकिन उनमें से 10 ऐसे कामों की छंटनी करें, जो सबसे आवश्यक हों। मल्टी टास्किंग में सबसे पहले किए जाने वाले काम को तय करके पूरा करें। लक्ष्य तय करके संकल्प पूर्वक उसकी तरफ बढें। आईपीएस मीणा ने बताया कि सकारात्मक सोच के साथ जीवन जीना ही बेहतर इंसान बनने के लिए आवश्यक है। व्यक्तित्व विकास की अवधारण के अनुसार व्यक्ति अपनी उम्र के हर पड़ाव पर अपने आपको बदल सकता है। मनुष्य में अनन्त संभावनाएं छिपी रहती हैं। वह संकल्प लेकर किसी भी दिशा में आगे बढ सकता है। इसके लिए दृढ विश्वास की आवश्यकता रहती है। अंत में प्रेयस सोनी ने आभार ज्ञापित किया। वेबिनार का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

व्यक्तित्व के विकास के लिए जरूरी है शिक्षा, आचरण, कठिन श्रम, संवेदनाओं, सूचना-संचार का संतुलन- डॉ. रत्तू

चतुर्थ दिवस 14 जुलाई को मुख्य वक्ता जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ मीडिया के डायरेक्टर डॉ. के.के. रत्तू ने कहा है कि कभी अपने आपको कमजोर मत समझो, बल्कि यह मानकर चलना चाहिए कि आप विश्व के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। अपने आत्मविश्वास को मजबूत रखोगे तो हौसले खुद ही फौलादी बन जाएंगे। जीवन में साहस का महत्त्व होता है और साहस की बदौलत ही बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने शिक्षा, आचरण, कठिन श्रम, संवेदनाएं, सूचना का संचार आदि तत्त्वों का विश्लेषण करते हुए बताया कि व्यक्तित्व के विकास के लिए इन सब तत्त्वों की आवश्यकता रहती है। समय की पाबंदी के साथ इनका उचित प्रबंधन किया जाए, तो सफलता हर हाल मिलती ही है। प्रारम्भ में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया और अंत में श्वेता खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया। संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

आत्मविश्वास, साहस और तनावमुक्त होकर बोलना होता है प्रभावी- संदीप सुनेजा

व्याख्यान माला के पंचम दिवस 15 जुलाई को मुख्य वक्ता जूनियर चैम्बर आफ इंटरनेशनल (जेसीआई) इंडिया के नेशनल ट्रेनर संदीप सुनेजा ने सार्वजनिक प्रभावी वक्तृत्व की कला पर बोलते हुए कहा कि जीवन में सीखने का महत्त्व होता है और व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में सीखता ही चलता है, इसलिए यह कहना भी उपयुक्त ही होगा कि 'सीखना बंद तो जीना बंद'। व्यक्ति में आत्मविश्वास और साहस होना जरूरी है। इस अवसर पर सुनेजा ने तीन छात्राओं को उनके स्पीच देने की शैली, शब्दों और साहस के लिए पुरस्कृत भी किया गया। उन्होंने भावना, मल्लिका व स्मृति कुमारी को ईपीएस किट प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम में प्रारम्भ में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मुख्य वक्ता का परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

न अभाव में जीओ, न किसी के प्रभाव में जीओ, केवल अपने स्वभाव में जीओ- प्रो. शर्मा

एसएवी जैन गर्ल्स पीजी कॉलेज श्रीगंगानगर की एचओडी प्रो. निक्की शर्मा ने 16 जुलाई को 'आत्म नेतृत्व क्षमता के विकास के विविध आयाम' विषय पर बोलते हुए कहा है कि जीवन में केवल धन कमा लेना ही सफलता नहीं कही जा सकती है। सफलता के लिए यह भी देखा जाता है कि आपके लोगों के साथ सम्बंध कैसे हैं। उन्होंने सफलता का सूत्र देते हुए कहा कि न तो अभाव में जीओ, न किसी के प्रभाव में जीओ, बल्कि जीओ केवल अपने स्वभाव में जीओ। उन्होंने सफल नेतृत्व के लिए सात आयामों का विवरण प्रस्तुत करते हुए अपने आपको सुधारने की दिशा में स्वयं के बारे में सोचने, कामयाबी के लिए बेहतरीन बातें संकलित करने, जीवन भर सीखते रहने, मानसिक व शारीरिक क्षमताओं को बढाने, समता व समभाव में जीना, क्षमा के भावों को विस्तृत करने आदि के द्वारा जीवन को सार्थक बनाने की जरूरत पर बल दिया। वे अंतिम दिवस पर मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित कर रही थी। प्रारम्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने परिचय प्रस्तुत किया और उनका स्वागत किया। अंत में श्वेता खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ चिंतन' अवधारणा पर प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नवप्रवेशित छात्राओं के लिए 12 सितम्बर को प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की मौलिक विशेषताओं एवं वार्षिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी भी छात्राओं को दी गई। डॉ. प्रगति भटनागर एवं श्वेता खटेड़ के निर्देशन में आयोजित इस शिविर में योगाचार्या डॉ. विनोद कस्वा ने छात्राओं को बेहतरीन शिक्षा में सहायक प्रेक्षाध्यान व कुछ यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाकर उन्हें 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ चिंतन' की अवधारणा के बारे में बताया। छात्राओं के लिए रखे गए प्रेरक व्याख्यान में श्वेता खटेड़ ने व्यक्तित्व विकास के गुर सिखाए। टैलेंट शो राउंड में नवप्रवेशित छात्राओं ने अपनी आंतरिक प्रतिभा का बहुमुखी प्रदर्शन किया। सीनियर छात्रा खुशी जोधा ने स्मार्ट बोर्ड पर पीपीटी के माध्यम से महाविद्यालय की सुविधाओं का प्रस्तुतिकरण विस्तार से किया। इससे पूर्व शिविर के उद्घाटन सत्र अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय के ग्रामीण अंचल में महत्त्व एवं नारी शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के योगदान के बारे में चर्चा करते हुए नारी शिक्षा के विकास में इस विश्वविद्यालय को महत्त्वपूर्ण बताया। प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य आईटी प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा आकांक्षा शर्मा ने किया।

संविधान दिवस पर रक्षा की शपथ

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी राष्ट्र का संविधान उस राष्ट्र का प्राण एवं आत्मा होती है। भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है, जिसके निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। भारत सरकार द्वारा 2015 से भीमराव अंबेडकर की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष संविधान दिवस मनाया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य संविधान के आदर्शों एवं मौलिक प्रावधानों के प्रति नागरिकों में आस्था एवं सम्मान का भाव जागृत करना है। इस अवसर पर छात्रा हर्षिता ने भी अपने विचार व्यक्त किए और संविधान की प्रस्तावना का पठन किया जाकर संविधान की रक्षा की शपथ ली गई। कार्यक्रम का संयोजन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित होने वाले मासिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम में 20 दिसम्बर को भूगोल संकाय की तनिष्का शर्मा ने 'टिड्डियों का हमलाः चेतावनी की घण्टी' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यान में तनिष्का ने बताया कि टिड्डी उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में जन्म लेने वाला ऐसा जीव है, जो लोगों की आजीविका खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण एवं आर्थिक विकास पर खतरा उत्पन्न करता है। इनमें भी रेगिस्तानी टिड्डियों को दुनिया के सभी प्रवासी कीट प्रजातियों में सबसे खतरनाक माना जाता है। इनका जीवन काल 3 महीनों से लेकर अधिकतम 5 महीनों का होता है। टिड्डियों और जलवायु परिवर्तन के संबंध को बताते हुए शर्मा ने कहा कि वैश्विक तापमान का बढ़ना बाढ़ एवं महामारी जैसी वैश्विक आपदाओं को आमंत्रित करता है और बढ़ते वैश्विक तापमान का एक परिणाम यह भी हुआ है कि एक बड़े स्तर पर टिड्डियों की संख्या में आमूलचूल वृद्धि देखने को मिल रही है। सभी देशों को साझा प्रयास करके वैश्विक तापमान में होती बढ़ोतरी में कमी लानी चाहिए, जिससे कि इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से सहज पार पाया जा सके। इनके नियंत्रण के लिए समय रहते केंद्रीय सरकार एवं राज्य सरकारों के समन्वित प्रयास किए जाने जरूरी है। अन्यथा विशाल टिड्डी दल किसी विशाल भूभाग को वीरान बना देने में देर नहीं लगाता। अंत में प्रेयस सोनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के संयोजक अभिषेक चारण रहे।

शांति की आवश्यकता पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम के अन्तर्गत 'दी नीड फोर पीस' (शांति की आवश्यकता) विषय पर व्याख्यान का आयोजन 1 दिसम्बर को किया गया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैश्विक शान्ति एवं मानसिक उन्नति के लिए आज आन्तरिक शान्ति की महत्ती आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। विश्वशान्ति को पृथ्वी तक सीमित रखना संकुचित प्रवृत्ति मानते हुए उन्होंने अंतरिक्ष शान्ति को भी इसी अवधारणा में समाहित रखा और इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति द्वारा मानवीयता, दयालुता, विनम्रता, परोपकार की भावना आत्मसात् किए जाने की और आवश्यकता बताते हुए कहा कि निरन्तर अभ्यास के द्वारा यह सब संभव है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि संस्थान के पहले अनुशासता आचार्यश्री तुलसी के मनोभाव 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' को आन्तरिक शांति एवं उसी आन्तरिक शान्ति के बल पर विश्व शांति की कल्पना की। अंत में श्वेता खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

कृष्ण जन्मोत्सव पर्व मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की प्रेरणा से 18 अगस्त को आयोजित कृष्ण जन्माष्टमी के कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. अभिषेक शर्मा ने श्री कृष्ण को सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बताते हुए उनके जीवन के संघर्ष और उसके बावजूद उनके सदैव प्रसन्नचित्त रहने के महत्व को बताया और उन्होंने कहा कि कृष्ण जन्मोत्सव मनाए जाने की सार्थकता उनके जीवन से सीख प्राप्त करने तथा जीवन में अपनाने का प्रयास करने में बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रेखा तिवारी ने कहा कि कृष्ण के जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। चाहे कितना ही संघर्षपूर्ण जीवन क्यों न जीना पड़े, हमेशा प्रसन्न मुद्रा में रहना चाहिए। कार्यक्रम में विभिन्न छात्राओं नीलम कलाल, तनीषा भोजक आदि ने भी अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के अंत में श्वेता खटेड़ नें धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

छात्रा दिवस के रूप में मनाया डॉ. एपीजे कलाम का जन्मदिन

संस्थान में संचालित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में पूर्व राष्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के जन्मदिन पर 15 अक्टूबर को छात्रा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि डॉ. कलाम एक ऐसी शख्सियत थे, जिनका जीवन सादगीपूर्ण होने के साथ ही उच्च स्तरीय दृष्टकोण एवं चिंतन से युक्त भी था।

उन्होंने कहा कि डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस दिशा में सटीक उदाहरण है कि जीवन में विपरीत परिस्थितियों तथा असफलताओं के बावजूद भी सफलता प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय मनुष्य को श्रेष्ठ एवं उच्च बनाता है और लक्ष्य प्राप्ति में सहायक प्रेरक बनता है। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

गूगल डॉक्यूमेंट पर मासिक व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 4 नवम्बर को आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में 'गूगल डॉक्स' पर आईटी की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने आधुनिक तकनीकी के ऑनलाइन वर्ड प्रोसेसर में समाहित खूबियों एवं उसके उपयोग की महत्ता को उजागर किया। उन्होंने गूगल डॉक्यूमेंट के उपयोग को प्रायोगिक रूप से भी साझा किया तथा बताया कि गूगल डॉक्स के उपयोग द्वारा कई सारे व्यक्ति मिलकर किसी डॉक्यूमेंट पर एक साथ कार्य कर सकते हैं। साथ ही गूगल डॉक्स के माध्यम से डॉक्यूमेंट को ऑनलाइन पब्लिश भी किया जा सकता है। गूगल डॉक्स हमें अपने डॉक्यूमेंट में लिखे हुए कंटेंट से संबंधित रिसर्च पेपर्स, चित्र आदि इंटरनेट से खोज कर तुरंत उपलब्ध कराता है। गूगल डॉक में बनाए गए डॉक्यूमेंट को पीडीएफ, ईपीयूबी आदि अन्य कई फॉर्मेट में डाउनलोड भी किया जा सकता है। व्याख्यान की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने व्याख्यान को वर्तमान दौर की तकनीकी शिक्षा प्रणाली में उपयोगी एवं सारगर्भित बताया। अंत में व्याख्यानमाला प्रभारी अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया।

हिंदी दिवस मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हिंदी दिवस के मौके पर 14 सितम्बर को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज समूचा विश्व हिंदी भाषा सीखने की ओर लालायित है, विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी को अनिवार्य एवं वैकल्पिक दोनों विषयों के रूप में पढ़ा और पढ़ाया जा रहा है। हिंदी को विश्व में वह सम्मान मिल रहा है, जिसकी वह अधिकारिणी है। उन्होंने अपनी चर्चित पुस्तक 'ऐसे थे मालवीय' के कुछ रोचक प्रसंगों को भी रखा और बताया ताकि हिंदी भाषा के प्रति आदर सम्मान एवं गर्व की अनुभूति की जा सके। कार्यक्रम में छात्रा खुशी जोधा, तेजस्विनी शर्मा, जीनत बानो, वंदना आचार्य, तनीषा भोजक, नेहा पारीक, खुशबू सोनी, प्रियंका भंसाली एवं पूजा शर्मा आदि ने भी हिंदी के पक्ष में अपनी अभिव्यक्ति दी। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 26 जुलाई को कारगिल शहीद दिवस पर शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय वीर सिपाहियों के अदम्य साहस एवं अनूठे शौर्य के बल पर इस दिन कारगिल जैसी दुर्गम चोटी को दुश्मन के चंगुल से छुड़ाकर एवं दुश्मन के हौसलों को नेस्तनाबूद करते हुए कारगिल की चोटी पर विजयी भारतीय तिरंगा फहराया था। उन्होंने इस अवसर पर कारगिल युद्ध के हीरो रहे परमवीर चक्र विजेता कैप्टन विक्रम बत्रा एवं राइफलमैन संजय कुमार की कहानी सुनाई तथा बताया कि उन्होंने युद्ध में अपने प्राणों की परवाह न करते हुए असंभव को संभव कर दिखाया।

राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में कांता सोनी रही अव्वल

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा कांता सोनी ने 21 अक्टूबर को राज्यस्तरीय निबंध प्रतियोगिता में चयनित राज्य स्तरीय मैरिट में शामिल हुई है। महाविद्यालय के विवेकानंद क्लब के प्रभारी अभिषेक चारण ने बताया कि क्लब की छात्रा सदस्या कान्ता सोनी ने मेहता कॉलेज एंड इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर एवं मेहता टीचर ट्रेनिंग कॉलेज उदयपुरिया के संयुक्त तत्त्वावधान में गांधी जयंती पर आयोजित राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता के उपरांत जारी किए गए परिणामों की सूची में राज्यस्तर पर चयनित श्रेष्ठ 5 प्रतिभागियों में अपना स्थान बनाया है। इस उपलब्धि के लिए आयोजक समिति द्वारा छात्रा कांता सोनी को पुरस्कृत किया गया। यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की ओर से भी प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी द्वारा छात्रा को संस्थान का स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया एवं छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। इस अवसर पर सभी छात्राएं एवं संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

मातृभाषा पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मातृभाषा पर आयोजित कार्यक्रम में 10 दिसम्बर को अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि मातृभाषा किसी भी व्यक्ति के शब्द एवं संप्रेषण कौशल की उद्गम होती है। मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है, साथ ही हमारे अंदर देशप्रेम की भावना भी उत्प्रेरित करती है। मातृभाषा व्यक्ति के संस्कारों की परिचायक होती है, जहां से हम अपनी प्रथम अभिव्यक्ति प्राप्त करते हैं। चिंतन एवं मनन की समृद्ध परंपराएं मातृभाषा से ही प्रारंभ होकर अपना ऐतिहासिक अस्तित्व प्राप्त करती हैं। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण ने मातृभाषा में स्वरचित रचना प्रस्तुत की। कोमल मुंडेल, राखी शर्मा, रवीना बाजिया, शुभा भोजक, चंचल, कविता चौधरी, कांता सोनी, रेखा प्रजापत आदि छात्राओं ने भी कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। डॉ. बलवीर सिंह ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

आजादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण व निर्देशन में जैविभा संस्थान में 'आजादी अमृत महोत्सव' के तहत कार्यक्रमों की श्रृंखला का संचालन किया गया।

वैश्विक नेतृत्व की दिशा में मौजूद है भारत के समक्ष अनेक चुनौतियां- प्रो. यादव

'आजादी का अमृत महोत्सव' पर देश के 75 सालों की स्थिति का अवलोकन

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के अफेयर्स एकेडमी के डीन प्रो. आरएस यादव ने कहा है कि आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 75 सालों की अवधि में पलट कर देखना चाहिए कि देश ने क्या खोया और क्या पाया। आजादी के बाद देश में संविधान के प्रारूप में भारत के लक्ष्य तय किए थे। राजनीतिक परिदृश्य में इन्हें हम 4 बिन्दुओं में विभाजित करके आकलन कर सकते हैं। गवर्नेंस, हार्ड पावर केपेबिलिटी, सॉफ्ट पावर और ग्लोबल एफेयर्स के रूप में समस्त स्थिति को देखा जा सकता है। वे यहां संस्थान में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत 'भारत के 75 वर्षों के व्यतीत और भावी संभावनाओं की जांच' विषय पर 15 जुलाई को व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में लोकतंत्र की मजबूती, आर्थिक और सामरिक मोर्चों पर देश की आत्मनिर्भरता, विश्वभर में भारतीय मूल्यों की स्थापना, सम्मान और स्वीकार्यता का बढना, भारत के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बदल कर बचाव की स्थिति से आक्रामक की स्थिति बनाने और वैश्विक नेतृत्व करने की विदेश नीति लागू करने आदि की सफलताएं गिनाई जा सकती है, लेकिन इनके साथ ही देश के सामने नई चुनौतियां भी खड़ी हो गई हैं। प्रो. यादव ने सबके लिए समान काननू-व्यवस्था लागू करने, शासन की पारदर्शिता व जवादेही, शासन में सबकी भागीदारी तय करने, लोकतंत्र की संस्कृति का विकास करने, सभी विविधताओं के समान रूप से पनपने, सबके समादर और परस्पर सद्भाव की प्रवृत्ति का विकास, चुनाव जीतने के लिए प्रलोभन भरे वायदे और संसाधनों के दुरुपयोग को रोके जाने, जीडीपी के साथ एचडीआई को भी बढने देना, सीमाओं की रक्षा के साथ मनुष्य मात्र की हर पहलू से रक्षा सुनिश्चत करने, विश्व के अन्य देशों की आंतरिक हालात पर नियंत्रण करने व समाधान करने की दिशा में भूमिका निभाने की चुनौतियां पार करने आदि की सफलता पर पर ही देश को वैश्विक नेतृत्व मिल सकता है।

प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रो. यादव को शॉल ओढा कर, स्मृति चिह्न व साहित्य भेंट करके सम्मान किया तथा उनका परिचय प्रस्तुत किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. प्रदीप यादव रोहतक भी उपस्थित रहे। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

लोकमान्य गंगाधर तिलक की 166वीं जयंती मनाई

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 166वीं जयंती 23 जुलाई को मनाई गई। अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि एक महान् क्रांतिकारी, महान् विचारक, बेहतरीन शिक्षक एवं समाज सुधारक थे तिलक। प्रो. त्रिपाठी ने तिलक ने लिखी गई पुस्तक 'गीता रहस्य' पर भी अपने विचार रखे, साथ ही उनके द्वारा संपादित पत्र 'मराठा' एवं 'केसरी' की तात्कालिक लोकप्रियता पर प्रकाश डाला। सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने तिलक स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका पर प्रकाश डाला। छात्रा अभिलाषा स्वामी ने लोकमान्य तिलक के प्रेरक जीवन पर अपने विचार रखे। अंत में प्रो. रेखा तिवाड़ी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

'स्वास्थ्य व रोग' सम्बंधी सेमिनार का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में आजादी के अमृत महोत्सव योजना के तहत 'स्वास्थ्य व रोग' विषय में "बायोलॉजी : द साइंस ऑफ लाइफ" सेमिनार का आयोजन 8 अगस्त को किया गया। सेमिनार में बीएससी थर्ड सेमेस्टर की छात्रा खुशी जोधा ने सबसे खतरनाक बीमारियों में से एक 'कैंसर (मालिगनेंसी)' के कारण, निदान, उपचार, नियंत्रण व कैंसर से जोड़ी न्यू रिसर्च आदि का विश्लेषण करते हुए व्यापक जानकारी दी।

छात्रा साना ने डीएनए के जीवन में अहम भूमिका निभाने, डीएनए की जांच के अलग-अलग तकनीकियों के बारे में बताया। छात्रा सपना निठारवाल ने सीआईपीए रोग के कारण, लक्षण व दुष्परिणामों के संबंध में बताया। सेंट्रल सेंरिनविटी के बारे में जानकारी देते हुए सपना ने दिमाग में न्यूरोसिग्नल के परिवर्तन होने के कारण शरीर में आने वाले बदलावों के बारे में बताया। सेमिनार के संयोजक डॉ. विष्णु कुमार ने सेमिनार की रूपरेखा प्रस्तुत की। अंत में सेमिनार के अध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल जैन ने कैंसर और सीआईपीए पर व्यापक जानकारी दी और डीएनए फिंगर प्रिंटिंग के महत्त्व के साथ बीपी, डायबिटीज और स्लिप डिस्क आदि बीमारियों के लक्षण, कारण व इलाज के विषय में बताया। सेमिनार का संचालन दिव्या पारीक ने किया।

'हर घर तिरंगा अभियान' का शुभारम्भ

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत 'हर घर तिरंगा' अभियान का शुभारंभ 8 अगस्त को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों तथा एनसीसी के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सप्ताह भर में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। मुख्य वक्ता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रसेवा की भावना रखने की अपील की। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया। एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

'हर घर तिरंगा' निबंध प्रतियोगिता में सूर्यांशा प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत "हर घर तिरंगा" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन 12 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि अपने घर पर तिरंगा झंडा फहराने के लिए प्रोत्साहित करने का यह अभियान राष्ट्र निर्माण में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर सूर्यांशा, द्वितीय स्थान पर उषा सारण, तृतीय स्थान पर ललिता बिडियासर रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया।

राष्ट्रीय एकता एवं एकजुटता के लिए गायन कार्यक्रम का आयोजन

'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्यक्रमों की श्रृंखला में पंच-प्राण थीम को आधार मानकर भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों के संदर्भ में संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय एकता एवं एकजुटता को बढ़ाने के लिए 1 दिसम्बर को गायन कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में पूजा, राधिका, वृंदा तथा तनीषा ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत ओजस्वी गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने स्वरचित राष्ट्रभक्ति की कविता के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रभक्ति की भावना का संदेश प्रसारित किया तथा बताया कि राष्ट्र की एकजुटता तथा एकता को बनाए रखने के लिए नागरिकों में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण समर्पण की भावना होनी चाहिए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. बलबीर सिंह ने किया और अंत में सह-संयोजक अभिषेक शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

मूल कर्तव्य की थीम पर छात्राओं ने उकेरे रंग-बिरंगे पोस्टर

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में पंच-प्राण थीम को आधार मानकर भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों के संदर्भ में संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नागरिकों के मूल कर्तव्य के प्रति जागरूकता एवं चेतना लाने के लिए 6 दिसम्बर को पोस्टर निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पूजा शर्मा, तनीषा भोजक, युक्ता सेन, जिन्नत बानो आदि छात्राओं ने अपनी कल्पाओं के आधार पर अलग-अलग रूपों में पोस्टर तैयार किए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने छात्रों द्वारा बनाए गए पोस्टरों का अवलोकन किया तथा कहा कि नागरिकों के मूल कर्तव्य राष्ट्र के प्रति दायित्व बोध करवाते हैं, अतः दायित्व निर्वाह को पूरा करने के लिए हमें इनका निष्ठा से पालन करना चाहिए। उन्होंने छात्राओं की इस सृजनात्मक गतिविधि की सराहना की। इस अवसर पर कार्यक्रम के सह-संयोजक अभिषेक शर्मा, संकाय सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, तनिष्का शर्मा आदि उपस्थित रहे।

'हर घर तिरंगा' रैली निकाल कर लगाए तिरंगे झंडे

संस्थान में एनसीसी कैडेट्स और छात्राओं ने संयुक्त रूप से सभी संकाय सदस्यों के साथ मिलकर तिरंगा रैली का आयोजन 13 अगस्त को किया। रैली को कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। उन्होंने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान प्रत्येक देशवासी के लिए स्वाभिमान का पर्व है। रैली के दौरान छात्राओं ने महाश्रमण विहार, भिक्षु विहार आदि में भी तिरंगे लगाए गए।

तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेश कुमार ने रैली को आशीर्वचन देते हुए कहा कि युवा शक्ति देश का आधार होता है। जब युवा अंगड़ाई लेता है तो उसका असर पूरे देश में परिवर्तनकारी होता है। उन्होंने राष्ट्रप्रेम की भावना को हर युवा में बलवती करने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि आज यंग इंडिया, हेल्थी इंडिया और स्ट्रोंग इंडिया की जरूरत है, जो इन विद्यार्थियों पर निर्भर करता है। रैली ने जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय परिसर में सभी कार्यालयों और फिर चौथी पट्टी होते हुए शहर के विभिन्न मार्गों से निकल कर पहली पट्टी होकर वापस विश्वविद्यालय पहुंची। रैली में प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा, डॉ. बलवीरसिंह चारण, डॉ. आभासिंह, डॉ. अनिता जैन, प्रगति चौरड़िया आदि उपस्थित थे।

पोस्टर प्रतियोगिता में पूजा शर्मा व निबंध में महिमा दिलोया प्रथम रही

'हर घर तिरंगा अभियान' के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों तथा एनसीसी के संयुक्त तत्त्वावधान में पोस्टर प्रतियोगिता तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन 16 अगस्त को किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में छात्रा पूजा शर्मा प्रथम रही। दूसरा स्थान राधिका तथा नजमा ने प्राप्त किया और तीसरा स्थान जीनत बानो व सुनीता ने प्राप्त किया। निबंध प्रतियोगिता में महिमा दिलोया प्रथम स्थान पर रही। दूसरा स्थान दिव्या भार्गव एवं अभिलाषा स्वामी ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान पर माया शर्मा तथा खुशी जोधा रही। प्रतियोगिता के आयोजन में एनएसएस की दोनों इकाइयों के प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर व डॉ. बलबीर सिंह तथा एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा का निर्देशन रहा।

बिरसा मुंडा की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 15 नवम्बर को आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में आदिवासियों के भगवान कहे जाने वाले बिरसा मुण्डा की जयन्ती पर एक कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण ने बताया कि कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि 15 नवम्बर 1875 रांची (झारखण्ड) में साधारण जनजातीय परिवार में जन्मे बिरसा बालपन से ही विभिन्न अवसरों पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते रहे। उन्होंने आदिवासियों पर किये जाने वाले शोषण को रोकने के लिए जमीदारों के विरुद्ध लड़ाई भी लड़ी। तात्कालिक सरकारों द्वारा उनके कुशल नेतृत्व से बौखला कर उन्हें भीड़ को भड़काने के आरोप में कई बार गिरफ्तार भी किया गया, फिर भी बिरसा मुंडा कर्तव्य पथ से विचलित नहीं हुए। 9 जून 1900 ई. में उनकी मृत्यु हो गई, कहा जाता है कि तात्कालिक हुकूमत द्वारा जेल में उन्हें जहर देकर मरवा दिया था। उन्हें आदिवासी अपना भगवान तक मानते हैं।

राष्ट्रभक्ति गायन प्रतियोगिता में तनीषा भोजक प्रथम स्थान पर रही

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान के पांचवे दिन 12 अगस्त को 'राष्ट्रभक्ति गायन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। कार्यक्रम की शुरुआत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी ने प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुए बताया कि छात्रा तनीषा भोजक प्रथम स्थान पर रही, शहनाज बानो और वंदना आचार्य दोनों संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रही। अभिलाषा स्वामी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. आभा सिंह तथा श्वेता खटेड थी। कार्यक्रम का संयोजन एनएसएस इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया। अंत में एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

देश भक्तिगीत प्रतियोगिता में उषा सारण प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में 'हर घर तिरंगा' अभियान कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत ''देश भक्ति गीत प्रतियोगिता'' का आयोजन 13 अगस्त को किया गया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान देश के प्रत्येक नागरिक को तिरंगे से जोड़ने और उसके प्रति सम्मान की भावना को अभिव्यक्त करने का अवसर है। प्रतियोगिता में 17 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान उषा सारण, पूजा चौधरी एवं सरला के समूह ने, द्वितीय स्थान दीपिका कटारा तथा तृतीय स्थान आशना ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया।

झांकियों में दिखाया स्वातंत्र्य वीरों का किरदार

अमृत महोत्सव कार्यक्रमों में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन के विशिष्ट आतिथ्य में महाविद्यालय की छात्राओं के साथ एनएसएस की स्वयंसेविकाओं एवं एनसीसी कैडेट्स द्वारा देश की आन, बान और शान पर मर मिटने वाले विभिन्न देशभक्त सेनानियों की झांकियों के रूप में प्रस्तुति देकर अपनी सहभागिता निभाई। इन झांकियों के माध्यम से यह बताने की कोशिश की गई कि भारत में ऐसे वीर क्रांतिकारी और वीरांगनाएं भी हुई हैं, जिनका आजादी में बड़ा योगदान रहा। कार्यक्रम में स्वातंत्र्य-वीर राजेंद्रसिंह लाहिड़ी, सचींद्रनाथ सान्याल, खुदीराम बोस, बटुकेश्वर दत्त, तोहा खालसा, रानी वेलु, सुचिता कृपलानी आदि को याद किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

भारत में विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की अपार संभावनाएं

आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में भारत सरकार द्वारा पंच-प्राण थीम को आधार मानकर निर्धारित किए गए लक्ष्यों के संदर्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन 30 नवम्बर को किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि वर्तमान में भारत खाद्यान्न, सैनिक क्षमता एवं विदेश नीति के मामलों में आत्मनिर्भर एवं प्रभावशाली भूमिका रखता है। यह स्थिति भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण आयाम सिद्ध हो सकती है। उन्होंने छात्राओं को प्रेरित किया कि राष्ट्र के प्रति निर्धारित अपने दायित्वों का पालन आवश्यक रूप से करें और अपनी सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर पर गर्व की अनुभूति करनी चाहिए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. बलबीर सिंह ने किया और अंत में सह-संयोजक अभिषेक शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

'मेरी भाषा मेरा हस्ताक्षर' पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में सिमरन एवं रेखा प्रथम रही

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में भारतीय भाषा उत्सव के तहत 'मातृभाषा का महत्त्व' शीर्षक पर एक कार्यक्रम 10 दिसम्बर को आयोजित किया गया। प्रो. त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मातृभाषा किसी भी व्यक्ति के शब्द एवं संप्रेषण कौशल की उद्गम होती है। मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है, साथ ही वह हमारे अंदर देशप्रेम की भावना भी उत्प्रेरित करती है। इस अवसर पर अभिषेक चारण ने मातृभाषा में स्वरचित रचना प्रस्तुति दी। छात्राओं की ओर से कोमल मुंडेल, राखी शर्मा, रवीना बाजिया, शुभा भोजक, चंचल, कविता चौधरी, कांता सोनी, रेखा प्रजापत आदि ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया, वहीं आभार ज्ञापन डॉ. बलवीर सिंह द्वारा किया गया। 'मेरी भाषा मेरा हस्ताक्षर' शीर्षक पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी 14 दिसम्बर को रखा गया, जिसमें निर्णायक सुश्री श्वेता खटेड़ एवं सुश्री देशना ने प्रथम तीन स्थानों का चयन किया। इनमें प्रथम स्थान पर दो छात्राओं क्रमशः सिमरन बानो, रेखा प्रजापत रहीं, वहीं प्रियंका भँसाली द्वितीय स्थान पर एवं छात्रा युक्ता तृतीय स्थान पर रही।

शांति एवं सह अस्तित्व भारतीय संस्कृति का मूल आधार

पंच-प्रण थीम को आधार मानकर भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों के संदर्भ में आयोजित कार्यक्रम में संस्कृति एवं विरासत संरक्षित करने के लिए 3 दिसम्बर को जागरूकता कार्यक्रम रखा गया, जिसमें मुख्य वक्ता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने बताया कि भारतीय संस्कृति व धरोहर को संपूर्ण

विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त है। हमारे वेद एवं पुराण, जिनमें भाईचारा, शिष्टाचार, मानवता, कर्तव्य-परायणता, परोपकार एवं त्याग संबंधी आदर्श समाहित हैं, का पालन सदैव सबको करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अपनी ऊर्जा का उपयोग दूसरों की निंदा के लिए करने के बजाय अपने विकास एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। छात्रा राधिका चौहान, कांता सोनी एवं राखी शर्मा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. बलबीर सिंह ने किया। अंत में सह-संयोजक अभिषेक शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

'विभाजनः एक त्रासदी' पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में 14 अगस्त को आयोजित व्याख्यानमाला में इतिहास के सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने 'विभाजनः एक त्रासदी' विषय पर व्याख्यान दिया। सोनी ने कहा कि विभाजन का मतलब महज जमीन के किसी भाग का बंटवारा मात्र नहीं था, बल्कि यह लाखों लोगों के पलायन की दर्दनाक दास्तान है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की।

वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान के दूसरे दिन 9 अगस्त को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों तथा एनसीसी के संयुक्त तत्वाधान में वृक्षारोपण कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान परिसर में आवश्यकतानुरूप अलग-अलग जगह 10 पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी, एनएसएस इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर, द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह, एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा आदि के साथ संकाय सदस्य, एनएसएस के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकायें तथा एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत थीम पर ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022'' का शुभारम्भ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार संस्थान, में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन वृ निर्देशन में ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' का शुभारम्भ सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा के साथ समारोह पूर्वक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल.जैन ने संस्थान के सभी अकादमिक अनाकदमिक सदस्यों एवं समस्त विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार मुक्त भारत हेतु किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार में लिप्त ना होने तथा भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों से आमजन को जागरूक करने सम्बन्धी सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा, शपथ ग्रहण के रूप में करवाई तथा कहा किसी भी राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा भ्रष्टाचार है। हमारा भारत विकसित देश तब ही बन पायेगा जब देश का प्रत्येक नागरिक भ्रष्टाचार उन्मूलन में पूर्ण ईमानदारी से सहयोग करेगा।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने बताया कि संस्थान में 31 अक्टूबर से 6 नवम्बर तक ''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' मनाया जा रहा है, जिसका मूल विषय ''भ्रष्टाचार मुक्त भारत : विकसित भारत'' है, कार्यक्रम का प्रारंभ सत्यनिष्ठ प्रतिज्ञा के साथ किया गया है।

'भ्रष्टाचार से मुकाबले में शिक्षा की भूमिका' पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

'भ्रष्टाचार से मुकाबले में शिक्षा की भूमिका' पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में राजकीय बांगड़ कॉलेज डीडवाना के सेनि. प्रो. अजयकुमार गौतम ने कहा कि सबके लिए आचरण की शुद्धता मनसा, वाचा, कर्मणा हर तरह से होनी चाहिए, तभी भ्रष्टाचार पर नियंत्रण संभव हो सकता है। उन्होंने शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों से अवगत करवाने व उन्हें ईमानदारी युक्त आचरण की प्रेरणा प्रदान देने को भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए आवश्यक बताया। संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रहे 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के अंतर्गत 'भ्रष्टाचार से मुकाबले में शिक्षा की भूमिका' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में वे सम्बोधित रहे थे।

राष्ट्रीय सेमिनार के विशिष्ट अतिथि केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर के डॉ. सतीश मंगल ने विचारों की शुद्धता को भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए अपने व्यवहार में प्रामाणिकता अपनाए जाने को आवश्यक बताया। प्रारम्भ में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और अंत में आभार ज्ञापित किया।

भाषण प्रतियोगिता आयोजित

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के द्वितीय दिवस भाषण प्रतियोगिता में 'भ्रष्टाचार निवारण के उपाय' पर दी गई प्रस्तुतियां में प्रथम स्थान खुशी जोधा ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर भावना चौधरी एवं स्मृति संयुक्त रूप से रही एवं तृतीय स्थान दिव्या पारीक ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के निर्णायक डॉ. अमिता जैन एवं श्वेता खटेड़ थे। प्रतियोगिता में शिक्षा विभाग व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं दिव्या पारीक, सपना निठारवाल, भावना चौधरी, निरंजन कंवर, ज्योति बुरडक, ललिता बिडियासर, स्मृति कुमारी, प्रीती सैनी, सना, तानिया, खुशी जोधा, इशिका आदि ने भाग लिया और भ्रष्टाचार निवारण पर अपने-अपने विचार रखें। कार्यक्रम के प्रारम्भ में निर्णायकों का परिचय संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने करवाया। स्वागत वक्तव्य डॉ. सरोज राय ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. गिरधारी शर्मा द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

क्विज प्रतियोगिता में बसंती, सरिता, श्वेता, उर्मिला व सपना रही शत-प्रतिशत अंकों से टॉपर

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के पांचवें दिन आयोजित क्विज प्रतियोगिता के परिणाम घोषित करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने प्रतियोगिताओं को ज्ञानवर्धक व व्यक्तित्व विकास में सहायक बताया। प्रो. जैन ने बताया कि क्विज प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में 5 ने शत-प्रतिशत अंक प्राप्त किए और टॉप रहीं। इनमें बसंती ठोलिया, सरिता मंडा, श्वेता, उर्मिला व सपना बाई मीना शामिल हैं। 95 प्रतिशत अंक लाने वाले विद्यार्थी 20 रहे। 90 प्रतिशत अंक वाले 24 और न्यूनतम अंक 60 प्रतिशत लाने वाले 100 विद्याथी रहे। इन सभी 149 विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। प्रारम्भ में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी शर्मा ने कहा कि इस क्विज प्रतियोगिता का उद्देश्य भ्रष्टाचार निवारण के क्षेत्र में विधिक प्रावधानों से विद्यार्थियों को अवगत करवाना है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, लोकपाल आदि की जानकारी विद्यार्थियों को होना आवश्यक है।

शैक्षिक संस्थानों में दी जाए ईमानदारी के आचरण की प्रेरणा

केन्द्रीय सतर्कता आयोग एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों के अनुरूप संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन व निर्देशन में आयोजित किये जा रहे 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का समापन समारोहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन ने कहा कि किसी भी राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा भ्रष्टाचार है। शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों से अवगत करवाकर उन्हें ईमानदारी युक्त आचरण की प्रेरणा प्रदान की जानी चाहिए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने सतर्कता सप्ताह की पूरी अवधि के दौरान होने वाली गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. शर्मा ने सतर्कता सप्ताह की सफलता में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन, पीआरओ जगदीश यायावर, समस्त संकाय सदस्यों एवं सपना निठारवाल, कुसुम काला एवं पूजा की फोटोग्राफी के सहयोग के साथ सभी विद्यार्थियों के सहयोग के लिए आभार जताया।

साइबर सुरक्षा

साईबर अपराधों से बचाव के साथ सभी साईबर नैतिकता अपनाएं

शिक्षा विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान (यूजीसी) द्वारा निर्देशित साइबर जागरूकता दिवस के अवसर पर ''साइबर सुरक्षाः राष्ट्रीय सुरक्षा'' कार्यक्रम का आयोजन 4 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम में विडियो क्लिप्स के माध्यम से सोशल मीडिया अपराध, ऑनलाइन लॉटरी फ्रॉड, फर्जी जॉब स्कैम, बैंकिंग फ्रॉड, ऑनलाइन शॉपिंग फ्रॉड, फर्जी वेबसाइट फ्रॉड तथा इनसे बचाव के उपायों पर विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में साइबर सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा का पर्याय बन चुकी है। साइबर अपराध व्यवसाय का रूप धारण कर चुका है, जिससे हम पूरी तरह सतर्क रहकर ही अपनी और अपने परिजनों की सुरक्षा कर सकते हैं, साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने प्रारम्भ में कार्यक्रम का परिचय प्रदान करते हुए कहा कि हमें इंटरनेट नैतिकता का पालन करना चाहिए। साइबर अपराधों से न केवल स्वयं को बल्कि अपने मित्रें एवं परिजनों को भी अवगत करवाना चाहिए। यदि किसी कारणवश साइबर अपराध के शिकार हो जाएं, तो तुरंत ही इसकी शिकायत www.cybercrime. gov.in पर या 1930 पर कॉल करके दर्ज कराएं।

जरा सी लापरवाही फंसा सकती है तकनीकी-ठगों के जाल - प्रो. त्रिपाठी

साइबर सुरक्षा एवं जागरूकता के लिए यूजीसी एवं भारत सरकार द्वारा निर्देशित अभियान के एक वर्ष पूरा होने पर संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविधालय में 6 अक्टूबर को साइबर सुरक्षा एवं सतर्कता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी' कहावत साइबर सिक्योरिटी के संदर्भ में सटीक है, क्योंकि लापरवाही करते ही हम तकनीकी-ठगों के जाल में फंस सकते हैं। पढ़ी-लिखी पीढी भी इन शातिर ठगों का शिकार आसानी से हो जाती है। हमें साइबर ठगों द्वारा फोन कॉल्स के जरिए पूछे जाने वाले ओटीपी नंबर किसी के साथ भी साझा नहीं करने चाहिए एवं उसकी सूचना तुरंत पुलिस को दी जानी चाहिए। व्याख्याता अभिषेक चारण ने साइबर सिक्योरिटी पर बताया कि विज्ञान और तकनीक की सुविधाएं झंझट में बदल रही हैं। सुविधा व दिखावे के लिए डाउनलोड किए जाने वाले बहुत से एप्स डाउनलोडिंग के दौरान कई व्यक्तिगत जानकारियां मांगते हैं और उन्हें साझा करने वा अक्सर साइबर ठगी के शिकार हो जाते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से हमें स्वयं सीखना, समझना चाहिए और अपने परिवार एवं रिश्तेदारों को भी साइबर ठगी का शिकार होने से बचने की नसीहत देनी चाहिए। छात्रा हर्षिता पारीक ने भी साइबर सिक्योरिटी पर विचार रखे। अंत में आईटी प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बलवीर सिंह ने किया।

साइबर-सिक्योरिटी सम्बंधी वीडियो मेकिंग कांटेस्ट में खुशी प्रथम रही

साइबर-सिक्योरिटी पर आधारित वीडियो मेकिंग कांटेस्ट में भाग लेने वाली छात्राओं में खुशी जोधा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने बताया कि यूजीसी के निर्देशानुसार जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में हर माह प्रथम बुधवार को आयोज्य 'साइबर जागरूकता दिवस' पर 7 दिसम्बर को कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस अवसर पर साइबर-सिक्योरिटी पर आधारित वीडियो मेकिंग कांटेस्ट का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कई प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर बीएससी सेकंड ईयर की छात्र खुशी जोधा रही। द्वितीय स्थान पर बीएससी फर्स्ट ईयर की छात्रा कांता सोनी रही तथा तृतीय स्थान बीए फर्स्ट ईयर की छात्रा तनीषा भोजक ने प्राप्त किया।

फिट इंडिया कार्यक्रम

फिट इंडिया कार्यक्रम श्रृंखला में व्याख्यान का आयोजन

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन मे 'फिट इण्डिया' कार्यक्रमों की श्रृंखला में भारत सरकार द्वारा 'स्वस्थ भारत- सशक्त भारत' थीम को आधार मानकर निर्धारित किए गए लक्ष्यों के संदर्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 9 दिसम्बर को व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। भारत युवाओं का देश है, यदि युवा स्वस्थ रहेगा तो देश के विकास में सहयोग कर पाएगा। स्वस्थ रहने के लिए सभी को ब्राह्म मुहूर्त में उठना चाहिए और ध्यान एवं योगा करना चाहिए। उन्होंने बताया कि अगर हम दिनचर्या बनाकर नियोजन के साथ हमारे जीवन में उतारें, तो हम निश्चित रूप से हमारे लक्ष्य को हासिल कर पाएंगे। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के महत्त्व को भी समझाया। कार्यक्रम में छात्रा खुशी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक शर्मा ने किया और अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया ।

फिट इण्डिया कार्यक्रम के तहत खो-खो खेल प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन मे 'फिट इण्डिया' कार्यक्रमों की श्रृंखला में 16 दिसम्बर को खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्राओं ने स्वैच्छा से उत्साहपूर्वक इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सेंटर फोर डिस्टेंस एंड ऑनलाईन एजुकेशन (सीडीओई) के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने शारीरिक रूप से फिट रहने के लिए खेलों की प्रवृति को महत्त्वपूर्ण बताया और सहभागी टीमों को शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में कोच दशरथ सिंह के निर्देशन में छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में टीम पीटी उषा का प्रथम स्थान रहा। कार्यक्रम में खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, तनिष्का शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक शर्मा ने किया।

फिट इण्डिया रन प्रतियोगिता में प्रियंका प्रथम रही

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन मे फिट इण्डिया कार्यक्रमों की श्रृंखला में 15 दिसम्बर को फिट इण्डिया रन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। कार्यक्रम में कोच दशरथ सिंह के निर्देशन में भाग लेने वाली छात्राओं में से प्रियंका प्रथम रही। शिवानी द्वितीय तथा कान्ता सोनी तृतीय स्थान पर रही। कार्यक्रम में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, खेल समन्वयक डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड, खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, तनिष्का शर्मा, श्वेता खटेड़ आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक शर्मा ने किया। अध्यक्ष प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने प्रथम स्थान पर रही प्रियंका को संस्थान का प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित भी किया।

कबड्डी खेल प्रतियोगिता का आयोजन, पीटी उषा टीम विजेता रही

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन मे 'फिट इण्डिया' कार्यक्रमों की श्रृंखला में 17 दिसम्बर को कबड्डी खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि संस्थान के कोच दशरथ सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस कबड्डी प्रतियोगिता में पीटी उषा टीम विजेता रही। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया और बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उनकी प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में योग तथा जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युमन सिंह शेखावत, खेल समन्वयक डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. प्रगति भटनागर, प्रेयस सोनी आदि उपस्थित रहे।

योग व प्रेक्षाध्यान अभ्यास कार्यक्रम आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन मे फिट इण्डिया कार्यक्रमों की श्रृंखला में संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में योग और प्रेक्षाध्यान अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन 20 दिसम्बर को किया गया। कार्यक्रम में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वां के निर्देशन में छात्राओं ने योग एवं प्रेक्षाध्यान की विभिन्न क्रियाओं का अभ्यास किया। कार्यक्रम में सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाईन एजुकेशन के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षता करते हुए योग के महत्त्व को उजागर किया और योग की दिशा में विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान को अग्रणी बताया। कार्यक्रम का संचालन खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह ने किया। अन्त में कार्यक्रम संयोजक अभिषेक शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में समस्त छात्राओं के अतिरिक्त डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, प्रेयश सोनी, आदि संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

एन.सी.सी. गतिविधियाँ

10 दिवसीय एटीएस शिविर में छात्राओं ने जीते पुरस्कार

संस्थान में संचालित एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन के जोधपुर में आयोजित 10 दिवसीय (01-10 जुलाई) एटीसी शिविर में एनसीसी एएनओ लेफ्टिनेंट आयुषी शर्मा के नेतृत्व में 34 केडेट छात्राओं ने भाग लिया और वहां आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए। शिविर में उन्होंने मेप रीडिंग, फायरिंग, फील्ड क्राफ्ट, बेटल क्राफ्ट, सेल्फ डिफेंस, ड्रिल आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के अंतिम दो दिवस में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें क्रॉस कंट्री प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की ब्रेवो कम्पनी की सुनीता, फायरिंग प्रतियोगिता में निशा प्रथम रही। डिबेट में दीपिका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भी विश्वविद्यालय की छात्रा ममता ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। शिविर के समापन पर केम्प कमांडेंट कर्नल अभिषेक चतुर्वेदी ने सम्बोधित किया तथा इस अवसर पर सभी विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

एनसीसी की छात्राओं को दो दिवसीय शिविर में दिए विभिन्न प्रशिक्षण

राईफल की मैकेनिज्म समझाई व मैप, कम्पास व ड्रिल की दी प्रेक्टिकल ट्रेनिंग

राष्ट्रीय कैडेट्स कोर एनसीसी का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर यहां संस्थान में 16-17 नवम्बर को आयोजित किया गया। जोधपुर से प्रशिक्षक के रूप में आए 3 राज गर्ल्स बटालियन के हवलदार महावीर सिंह ने यहां 50 एनसीसी कैडेट्स छात्राओं को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया। लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान इन सभी छात्राओं को कम्पास द्वारा मेप पढना, हाथ द्वारा डिग्री पढना, राईफल पॉइंट टू-टू को खोलना, उसके हिस्सों व पुर्जों के बारे में व्यावहारिक तौर पर जानकारी देना, मिलिट्री के इतिहास के बारे में जानकारी और ग्राउंड में ड्रिल का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी एवं लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा भी मौजूद रही।

समाज में अच्छा नागरिक बनने का प्रशिक्षण देता है एनसीसी- सुबेदार मेजर अजीत सिंह

एनसीसी छात्राओं को दिए बी व सी सर्टिफिकेट्स

संस्थान में चल रही 3 राज गर्ल्स बटालियन की एनसीसी कैडेट्स को एटीसी केम्प की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर 29 सितम्बर को सी और बी सर्टिफिकेट वितरित किए गए। ये प्रमाण पत्र यहां छात्राओं को जोधपुर बटालियन से आए सुबेदार मेजर अजीतसिंह व हवलदार महावीर सिंह तथा एनसीसी प्रभारी लेफिट्नेंट डॉ. आयुषी दाधीच व आचार्य कालूकन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रदान किए। इस अवसर पर सूबेदार मेजर अजीतसिंह ने कहा कि भारत में राष्ट्रीय कैडेट कोर सबसे बड़ा संगठन है, जिसमें लगभग 15 लाख एनसीसी कैडेट हैं। कैडेट्स का प्रशिक्षण समाज में अच्छा नागरिक बनने की दिशा में जीवन में एकता और अनुशासन अपनाना सिखाता है। एनसीसी का उद्देश्य कैडेट्स का सर्वांगीण विकास करना है। प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अच्छे से मेहनत करनी चाहिए। लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

एनसीसी कैडेट को ईमानदारी व नैतिकता के टास्क में मिला स्वर्ण-पदक

जोधपुर के सेतरावा गांव में 5 नवम्बर को सम्पन्न नेशनल कैडेट्स कोर के सात दिवसीय शिविर के दौरान विभिन्न प्रकार के टास्क में यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की एनसीसी छात्रा निशा ठोलिया के ईमानदारी और नैतिकता के टास्क में सर्वोत्तम रहने पर उसे गोल्ड मैडल प्रदान किया गया है। एनसीसी की प्रभारी लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि सेतरावा गांव के वीर दुर्गादास सी. सै. स्कूल में 29 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक आयोजित किए गए इस सीएटीसी के प्री रिपब्लिक केम्प में निशा ने भाग लिया था। उसे स्वर्णपदक मिलने पर यहां सभी छात्राओं ने हर्ष जताया। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने निशा को शुभकामना देते हुए बताया कि इस संस्थान में संतों के अनुशासन में विद्यार्थियों को जिस सच्चाई और नैतिकता की सीख दी जाती है, उसे इसी तरह से अपने जीवन का हिस्सा बना लेना चाहिए। नैतिक मूल्यों के आधार पर व्यक्ति अपने जीवन में सदा पुरस्कृत होता है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने छात्रा निशा को आगे बढने के लिए प्रेरित किया।

एनसीसी कैडेट्स को रेंक का वितरण किया

राष्ट्रीय कैडेट्स कोर एनसीसी की 3राज गर्ल्स बटालियन के कैडेट्स को 9 नवम्बर को संस्थान में रेंक प्रदान की गई। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा इन कैडेट्स को श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए अलग-अलग रेंक प्रदान की गई। उन्होंने इस अवसर पर सभी कैडेट्स को प्रेरित किया कि वे भी थोड़ी अधिक मेहनत करेंगी, तो किसी रेंक की हकदार बन सकती है। उन्होंने कहा कि जिसमें मनोबल और मेहनत करने की भावना होती है, उसकी सफलता में कोई रूकावट नही आती। लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि ने बताया कि बी-सर्टिफिकेट परीक्षा में 'ए' ग्रेड प्राप्त करने वाली 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली केडेट्स को ये रेंक प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि इसमें सीनियर अंडर ऑफिसर रेंक विद्या चौधरी को दी गई। जूनियर अंडर ऑफिसर रेंक गरिमा राठौड़ को, सार्जेंट रेंक प्रियंका व ममता को, कार्पोरल रेंक शुभा भोजक तथा लांस कापोरल रेंक पूजा इनाणियां को प्रदान की गई।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेकर लौटने पर एनसीसी छात्रा पूजा का सम्मान

नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में राजस्थान की ओर से प्रस्तुत कालबेलिया नृत्य में एनसीसी की ओर से हिस्सा लेने के बाद संस्थान की एनसीसी कैडेट् पूजा इनाणियां के वापस लौटने पर 22 अगस्त को संस्थान में कार्यक्रम आयोजित करके उसका स्वागत-सम्मान किया। यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हुए इस कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने उसका स्वागत किया तथा उसे सम्बंधित प्रमाण पत्र प्रदान किए। एनसीसी ऑफिसर डॉ. आयुषी शर्मा ने माल्यार्पण करके छात्रा का सम्मान किया। छात्रा इनाणियां ने इसके लिए जयपुर में एनसीसी के 10 दिवसीय केम्प में भाग लेने व चयनित किए जाने के बाद दिल्ली में आयोजित 15 दिवसीय आईडीसी कैम्प में भाग लिया और स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय समारोह में हिस्सा लिया था। छात्रा पूजा के इस सफल प्रदर्शन के बाद लौटने पर उसके लिए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में यह कार्यक्रम आयोजित करके उसका स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि संस्थान की कोई भी छात्रा जब कोई विशेष कार्य करती है, तो यहां सबका सिर गर्व ने उन्नत हो जाता है। श्रेष्ठता का सम्मान यहां की परम्परा है। एनसीसी राष्ट्रीय कार्य है और कर्तव्य पालन की गौरवमयी परम्पराओं की निर्वाहक है। श्रेष्ठ कार्य करने वाले का सम्मान अन्य छात्राओं को प्रेरणा देता है।

एनसीसी की छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक द्वारा दिया प्लास्टिक मुक्त भारत का संदेश

प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने के लिए एनसीसी की कैडेट्स छात्राओं ने 24 सितम्बर को लाडनूं तहसील कार्यालय के सामने नुक्कड़ नाटक करके आम लोगों को प्लास्टिक के बहिष्कार का संदेश दिया और प्रेरित किया कि वे अपने रोजमर्रा के काम में प्लास्टिक का उपयोग बंद करें। छात्राओं ने पॉलिथीन व पस्टिक की थैलियों में बाजार से सामान लाने के बजाए कपड़े का थैला साथ में रखने के लिए प्रेरित किया। जैन विश्वभारती संस्थान की राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) की छात्राएं 'प्लास्टिक मुक्त भारत' अभियान के तहत विश्वविद्यालय परिसर से टोली के रूप में रवाना होकर उपखंड कार्यालय पहुंची। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से आयोजित इस कार्यक्रम के लिए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस टोली को हरी झंडी दिखा कर यहां से रवाना किया और अभियान को सफल बनाने के लिए उन्हें प्रेरित किया। इन कैडेट्स के साथ एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा भी थी।

पुनीत सागर अभियान के तहत की सरोवर की सफाई

पुनीत सागर अभियान के तहत एनसीसी की छात्राओं ने 26 सितम्बर को यहां पाबोलाव तालाब जलस्रोत की सफाई की। संस्थान की राष्ट्रीय कैडेट कोर एनसीसी की छात्राएं इस पुनीत सागर अभियान के तहत जलस्रोतों की स्वच्छता के लिए कार्यक्रम संचालित कर रही है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से संचालित इस अभियान के बारे में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं को अभियान के बारे में जानकारी दी और परम्परागत जलस्रोतों की उपयोगिता के बारे में बताया और कहा कि ये सरोवर आदि पानी के स्रोत हमारी पुरानी पीढी की धरोहर है और आज भी उनकी उपयोगिता बनी हुई है, आने वाली पीढियों के लिए भी इस धरोहर का उपयोग बना रहेगी। इस अवसर पर छात्राओं ने एनसीसी प्रभारी डॉ. आयुषी शर्मा के नेतृत्व में श्रमदान करके पाबोलाव तालाब के अंदर और आसपास के क्षेत्र में सफाई की। उन्होंने अनावश्यक झाड़ियों और घासफूस को हटाया और कचरे को साफ किया। इसी तरह तालाब के अंदर के हिस्से को भी स्वच्छ बनाया।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

एक दिवसीय शिविर आयोजित

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम व द्वितीय के संयुक्त तत्त्वावधान में 23 दिसम्बर को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में विशिष्ट अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता संस्थान के वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन ने 'बचत की महत्ता' पर व्याख्यान दिया, उन्होंने अपने उद्बोधन से स्वयंसेविकाओं को मार्गदर्शन करते हुए कहा कि स्वयंसेवक जीवन में जागरूकता के साथ बचत के महत्ता को समझें। द्वितीय सत्र में स्वयंसेविकाओ को वेस्ट मेटेरियल से उपयोगी चीजें बनाना सिखाया गया तथा तृतीय सत्र में स्वयंसेविकाओ द्वारा महिला छात्रावास के आस-पास एवं गोपालपुरा स्थित आचार्य महाप्रज्ञ कॉलोनी व उसके पीछे की रोड़ की साफ-सफाई का कार्य किया गया। शिविर का संचालन एन.एस.एस. समन्वयक डॉ. आभा सिंह द्वारा किया गया।

अनधिकृत व संदिग्ध कॉल व मेल से बचने की जरूरत

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत सरकार तथा क्षेत्रीय निदेशक राष्ट्रीय सेवा योजना जयपुर के निर्देशानुसार प्रत्येक माह किए जाने वाले साइबर सुरक्षा संबंधी कार्यक्रमों की श्रृंखला में विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में 6 जुलाई को मासिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि इस युग की आवश्यकता के रूप में साइबर सुरक्षा काफी महत्त्वपूर्ण बन चुकी है। इसके लिए सबकी जागरूकता जरूरी है। किसी भी प्रकार की अनधिकृत एवं संदिग्ध कॉल अथवा मेल द्वारा प्राप्त की गई जानकारी से बचना चाहिए। उन्होंने साईबर अपराधों का हवाला देते हुए उनसे बचने के विविध उपाय भी सुझाए। कार्यक्रम का संयोजन एनएसएस की द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया। अंत में प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया।

जंक फूड के विरोध में छात्राओं ने रैली निकाल किया लोगों को जागरूक

जंक फूड से स्वास्थ्य पर होने वाले हानिकारक प्रभाव के प्रति जन समुदाय को जागरूक करने के उद्देश्य से संस्थान के शिक्षा विभाग एवं एनएसएस के संयुक्त तत्वाधान में 27 अगस्त को जागरूकता रैली एवं

सामुदायिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रैली को शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीएल जैन एवं एनएसएस यूनिट 2 के प्रभारी डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। रैली संस्थान परिसर से रवाना होकर चौथी पट्टी, ऋषभ द्वार होते हुए भूतोड़िया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पहुंची। जहां विभिन्न वक्ताओं ने जनजागृति सम्बंधी वक्तव्य प्रस्तुत किए। एनएसएस एवं शिक्षा विभाग की छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक कविता भाषण गीत आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर हाल ही में नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में राजस्थान प्रदेश की आरे से कालबेलिया नृत्य प्रस्तुति करने वाली छात्रा पूजा इनाणियां का सम्मान भी किया गया। इनाणियां सूरजमल भूतोड़िया बालिका सी.सै. विद्यालय की पूर्व छात्रा रही है और वर्तमान में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन अभिलाषा स्वामी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के प्राध्यापक डॉ. भावाग्रही प्रधान, डॉ. अमिता जैन, प्रमोद ओला एवं भूतोडिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन एनएसएस प्रभारी डॉ. आभा सिंह द्वारा किया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल तारेश शर्मा ने छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए आभार ज्ञापित किया।

स्वच्छता कार्यक्रम में वेस्ट प्लास्टिक सामान एकत्र किया

संस्थान विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेविकाओं ने स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत कैम्पस एवं होस्टल के आस-पास के स्थानों से प्लास्टिक एकत्रित करते हुए सफाई की। डॉ. आभा सिंह द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए 'स्वच्छ भारत अभियान' के अन्तर्गत करणीय कार्यों से अवगत करवाया। खुशी जोधा एवं अन्य स्वयंसेविकाओं ने प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान पर कविता, भाषण द्वारा प्रकाश डाला। कार्यक्रम में द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

राष्ट्रीय एकता सप्ताह में प्रश्नोत्तरी व एकता रैली का आयोजन

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता सप्ताह के अंतर्गत संस्थान के शिक्षा विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं एकता रैली का आयोजन किया गया। रैली विश्वविद्यालय परिसर से रवाना होकर प्रमुख मार्गों से होते हुए वापस विश्वविद्यालय पहुंच कर सम्पन्न हुई। रैली में राष्ट्रीय एकता के नारे और सरदार पटेल के जयकारे लगाए जाकर लोगों को राष्ट्र की एकता और अखंडता की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रम में एनएसएस प्रभारी डॉ. आभासिंह, डॉ. सरोज राय, प्रो. रेखा तिवाड़ी, अभिषेक चारण, डॉ. गिरीराज

भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. विष्णु कुमार, श्वेता खटेड़, देशना चारण, कुशाल जांगिड़, डॉ. अभिषेक शर्मा, प्रेयस सोनी आदि उपस्थित रहे।

स्वयंसेवकों द्वारा स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवको द्वारा 19 अक्टूबर को स्वच्छ भारत अभियान 02 के अन्तर्गत कैम्पस एवं हॉस्टल के आस-पास के स्थानों से प्लास्टिक एकत्रित करते हुए सफाई की। प्रथम ईकाई प्रभारी डॉ. आभा सिंह द्वारा कार्यक्रम का उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत करणीय कार्यों से स्वयंसेविकाओं को अवगत करवाया। खुशी जोधा एवं अन्य स्वयंसेविकाओं ने प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान पर कविता, भाषण द्वारा प्रकाश डाला। कार्यक्रम में द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. रविन्द्र सिहं राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

एक दिवसीय शिविर में सफाई अभियान

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कुलसचिव प्रो. बी.एल. जैन ने की। विशिष्ट अतिथि सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाईन एजुकेशन के निदेशक प्रो. ए.पी. त्रिपाठी थे। शिविर में मुख्य वक्ता के रूप वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन ने 'बचत की महत्ता' विषय पर बोलते हुए कहा कि जीवन में जागरूकता के साथ बचत किए जाने का अपना महत्त्व होता है। स्वयंसेविकाओं को स्वयं, परिवार व समाज में बचत को महत्त्व देना चाहिए। द्वितीय सत्र में वेस्ट मेटेरियल से उपयोगी चीजें बनाने के तरीके स्वयंसेविकाओं को सिखाए गए तथा तृतीय सत्र में स्वयंसेविकाओं द्वारा महिला छात्रवास के आस-पास एवं गोपालपुरा स्थित आचार्य महाप्रज्ञ कॉलोनी व उसके पीछे के रोड की साफ-सफाई का कार्य किया गया। शिविर का संचालन एन.एस.एस., समन्वयक डॉ. आभा सिंह, द्वारा किया गया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व-कृतित्व पर व्याख्यान का आयोजन

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय एकता सप्ताह के तहत संस्थान में आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों में एनएसएस एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में 29 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति में व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान 'वल्लभ भाई पटेल एन अनब्रेकेबल वाल' विषय पर रखा गया। इसमें इतिहास विभाग के सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान एवं आजाद भारत के एकीकरण में उनकी भूमिका पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने की। डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, श्वेता खटेड, अभिषेक शर्मा, अभिषेक चारण, देशना चारण एवं सभी विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वाधान में एनएसएस का स्थापना दिवस 24 सितम्बर को मनाया गया। इस अवसर पर सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्भव तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसकी स्थापना 24 सितम्बर, 1969 को की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्र के प्रमुख युवाओं में सेवा व अनुशासन के गुणों का सृजन करना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सेवा का कार्य एक धर्म है, जिसका निर्वाह करना प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। विशिष्ट अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि सेवा की भावना मन से होनी चाहिए, दिखावे के रूप में नहीं। स्वयंसेविका अभिलाषा, हर्षिता, साक्षी, टीना, मंजू आदि ने भी कविता एवं गीत के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति की। कार्यक्रम में द्वितीय इकाई के प्रभारी डॉ. रविन्द्र सिहं राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। प्रथम इकाई के प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने कार्यक्रम का संयोजन किया एवं स्वयंसेविकाओं को वर्षभर होने वाले कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।